॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अप्रैल, 2013 वर्ष 16, अंक 4 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2069-70 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 28

टंकारा में पूनम सूरी जी का आह्वान
प्रतिज्ञा, पुरुषार्थ, प्रतीक्षा, प्रार्थना, प्रयास करते रहें।

ऋषिबोधोत्सव हर्षोल्लास सहित सम्पन्न

मंचासीन श्री एस.के. शर्मा (मन्त्री प्रादेशिक सभा), श्री वेद प्रकाश गर्ग जी प्रधान आर्य समाज चैम्बुर, श्रीमती शिवराजवती आर्य (उप-प्रधान टंकारा ट्रस्ट, श्री मिठाई लाल सिंह जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई), श्री योगेश मुंजाल जी (ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट), श्री हंसमुख परमार (ट्रस्टी), श्री रविन्द्र कुमार, श्री महेश चोपड़ा जी, श्री आर. के सेठी (अधिकारी, डी.ए.वी.), स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती (यमुना नगर), श्री रामनाथ सहगल (मन्त्री टंकारा ट्रस्ट)

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 4 मार्च से 11 मार्च, 2013 तक ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न हुआ। दिनांक 4 मार्च से यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय के आचार्य श्री रामदेव जी के ब्रह्मत्व में निरन्तर 7 दिनों तक चलता रहा। उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारी वेदपाठी के रूप में उपस्थित थे। भारत के लगभग सभी प्रांतों से पधारे ऋषिभक्त इसमें सम्मिलित हुये। प्रतिदिन प्रात: 8 से 10 बजे तक एवं सायं 5 से 7 बजे तक यह यज्ञ निरन्तर सम्पन्न होता रहा। यज्ञ में प्रतिदिन प्रात: एवं सायं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सतपाल जी पथिक के मधुर भजन यज्ञवेदी पर ही होते थे। यज्ञवेदी ब्रह्मचारियों द्वारा इतने सुन्दर रूप से सजाया गया था कि उपस्थित जनसमूह जहां अन्य चित्रों को अपने कैमरों में कैद कर रहे थे वही यज्ञशाला की भव्यता एवं सुन्दरता को भी अपने कैमरों में उसकी रंगीन छवि को बाँधते नजर आये।

मुख्य कार्यक्रम 9 एवं 10 मार्च था जिसमें सबसे अधिक संख्या ऋषिजन्म भूमि पर उपस्थित थी उस दिन प्रात: 6 बजे से प्रभातफेरी जो कि टंकारा ग्राम एवं टंकारा परिसर में होती हुई गुजरी जिसमें उपस्थित आर्यजन ऋषिदयानन्द के गुणगान भजनों द्वारा गाते हुये मस्त हो रहे थे। विशेष आकर्षण था कि टंकारा के मुस्लिम परिवारों ने प्रात: प्रभातफेरी का चाय एवं शीतलजल से स्वागत किया। प्रभातफेरी का संयोजन श्री गीजूभाई व्यास स्वतन्त्रता सेनानी 95 वर्षीय पिछले 25 वर्षो से कर रहे हैं। प्रतिदिन प्रात: 6.30 बजे से 7.45 बजे तक प्राकृतिक योग, प्राकृतिक एवं आयुर्वेद चिकित्सा का कार्यक्रम आचार्य उमाशंकर, योगाचार्य (सूरत) द्वारा निरन्तर तीन दिन तक चलता रहा।

8 तारीख प्रात: यज्ञ में मुख्य यज्ञमान के रूप में श्री एस. के. शर्मा, मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं निदेशक डी. ए. वी. कालेज पब्लिकेशन्स विभाग एवं उनके साथ श्री विद्यामित्र ठुकराल एवं श्रीमती कृष्णा ठुकराल, श्री राजीव चौधरी, श्रीमती रेनू चौधरी, श्रीमती अमृता पॉल, श्रीमती वीना शाही, श्रीमती सुदर्शन चौधरी एवं श्रीमती

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामदेव जी, ब्रह्मचारियों सहित, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री (सचिव संस्कृति एकादमी, दिल्ली) यज्ञवेदी से उद्‌बोधन करते। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं गीतकार श्री सत्यपाल जी पथिक यज्ञवेदी से मधुर संगीत की वर्षा करते

शिवराजवती आर्य, ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट एवं वरिष्ठ उपप्रधान उपस्थित थे।

रात्रि 8 से 10 बजे तक अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम था जिसकी अध्यक्षता श्री एस. के. शर्मा, मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं निदेशक डी. ए. वी. कालेज पब्लिकेशन्स विभाग ने की । इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री वाचोनिधि आर्य (गांधीधाम) श्री विद्यामित्र ठुकराल (दिल्ली) एवं विशेष आमंत्रित श्रीमती उषा अरोड़ा (दिल्ली) श्रीमती अरूणा सतीजा (जयपुर) एवं पंडित रमेश चन्द्र मेहता (पूर्व स्नातक टंकारा) उपस्थित थे। इस सत्र के संयोजक थे आचार्य देवेन्द्र शास्त्री एवं आचार्य सत्यप्रकाश जी। इस सत्र में विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार के वेद पाठों का उच्चारण किया गया इसी के साथ भजन, कव्वाली एवं चन्द्रशेखर आजाद के जीवन चरित्र पर आधारित एक नाटक को प्रस्तुत किया गया। बच्चों के कार्यक्रमों की भव्यता से आकर्षित हो समस्त भारत से आये ऋषिभक्तों ने कार्यक्रम की प्रशंसा की एवं उपहार स्वरूप धनराशि भी दी।

कार्यक्रम के अन्त में श्री एस. के. शर्मा जी ने विद्वता पूर्ण ओजस्वी अध्यक्षीय भाषण दिया । उपस्थित जनसमूह उनके इस वक्तव्य से इतनी प्रभावित थी कि सभी उनकी विद्वता की प्रशंसा कर रहे थे ।

दिनांक 09.03.2013 को प्रातः प्रभातफेरी एवं योग के

(शेष पृष्ठ 11 पर)

ब्रह्मा जी का वरण करते श्री योगेश मुंजाल व आशीर्वाद प्राप्त करते श्री सुनील मानकटला

यज्ञवेदी पर आसीन श्री योगेश मुंजाल, श्रीमती अन्जु सुधीर मुंजाल, श्रीमती सरला ठक्कर, डी.ए.वी. के अधिकारीगण एवम् श्रीमति सुधा अरूण अबरोल

तीन की संख्या क्या अशुभ होती है?

लेख में इस शंका का समाधान करने का प्रयत्न किया है इसलिए पत्र के रूप में यह विचार हर उस पुत्री के लिए है जो धर्म में थोड़ी भी रूचि रखती हो ताकि उसे सत्यज्ञान हो सके।

तुम तीन की संख्या को अशुभ मानती हो। सुना है कि तुम सोचती हो कि यदि किसी स्थान पर तीन व्यक्ति जायेंगे तो जिस काम के लिए वह व्यक्ति गए हैं वह काम नहीं बनेगा। परन्तु यह तो केवल एक भ्रम है। कोई संख्या अशुभ नहीं।

तुम तीन की संख्या को अशुभ मानती हो परन्तु शुभ शब्द स्वयं ही तीन अक्षरों से बना है–'श्+उ+भ'। किसी के अन्दर कोई गुण हो, अच्छी बात है परन्तु गुण शब्द में भी तीन ही अक्षर हैं–'ग्+उ+ण'। तुम सुख चाहती हो सुख में भी तीन ही अक्षर हैं–'स्+उ+ख।' यदि अभी तक तुम कुंवारी हो तो मन में शादी की इच्छा रखती होगी और विवाह उपरान्त तुम्हें तुम्हारा पति सब से अधिक प्यारा लगेगा। पति शब्द में भी तो तीन ही अक्षर हैं–'प+त्+इ।' फिर शादी के पश्चात् तुम तीन हो जाओगे और वह तीसरा चाहे पुत्र हो या पुत्री तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। वह भी तो तीसरा ही है। क्या कभी यह सोचा गया है कि घर में तीसरा व्यक्ति आ गया है वह अशुभ है। फिर पुत्र किसे प्यारा नहीं लगता। पुत्र शब्द भी तो तीन अक्षरों–'प्+उ+त्र' से बना हुआ है। राम को मानती हो। राम शब्द में तीन अक्षर–'र्+आ+म' हैं। स्वयं परमात्मा का निज नाम ओ३म् है। उसमें भी तीन अक्षर 'अ+उ+म्' हैं। परमात्मा को अंग्रेजी में 'गॉड' कहते हैं। इसमें भी तीन ही अक्षर हैं। क्या परमात्मा अशुभ है? परमात्मा के गुण हैं कि वह संसार को पैदा करता है, चलाता है और संहार करता है। इन तीन गुणों के कारण उसका नाम ब्रह्मा, विष्णु, महेश है। संसार तीन भागों में बंटा है–जीवात्मा, परमात्मा और प्रकृति। पदार्थ भी तीन प्रकार के होते हैं–ठोस, तरल तथा गैस। लोक भी तीन हैं–पाताल, पृथ्वी और आकाश। वास्तव में पाताल भी पृथ्वी का ही भाग है और वेदानुसार 3 लोक हैं भूमि, द्यौ और अन्तरिक्ष। तीन प्रकार के गुण हैं–सतो गुण, रजो गुण और तमो गुण। ईश्वर भी सत् चित् और आनन्द है। उसे सत्यं, शिवं, सुन्दरम् इन तीन नामों से जाना जाता है। इच्छाएं तीन प्रकार की होती हैं–पुत्रैषणा, लोकैषणा और वित्तैषणा। तीन बार ही आचमन किया जाता है। तीन ही काल हैं–वर्तमान, भूत और भविष्य। शरीर की अवस्थाएं भी तीन हैं–बचपन, जवानी और बुढ़ापा। जीवन सुखी रखने के लिए तीन प्रकार के दुःखों से बचना जरूरी है–आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। किसी देश को शक्ति की परख करनी हो तो उसकी सेना को देखना पड़ता है। सेना के तीन विभाग हैं–जलसेना, थलसेना, और वायुसेना।

आप आरती तो करती ही हो। आरती को भी तीन भागों में बांटा गया है–पहला भाग है–उपासना। उपासना का अर्थ है–उप+आसना उप का अर्थ है समीप और आसना का अर्थ बैठना। जब हम किसी के समीप बैठते हैं तो उसके गुण दोष का निरीक्षण करते हैं कि वह क्या है, क्या कर सकता है? क्या नहीं कर सकता? आरती के प्रथम उपासना भाग में फिर तीन बन्द हैं। पहला बन्द है–**ओं जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।**

भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे।

परमात्मा के गुण का वर्णन किया गया है कि वह भक्तों के संकट को दूर करता है और भक्त उपासना से यह बात जान जाता है। दूसरी बात जो भक्त ने उपासना में जानी वह यह है–

जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।

और तीसरी बात की उपासना के पश्चात् जो भक्त को ज्ञान हुआ, वह है–

मात पिता तुम मेरे शरण गहूं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूं मैं जिसकी।।

आरती में उपासना के पश्चात् दूसरा भाग है–स्तुति। जहां उपासना का अर्थ है–पास बैठ कर गुणों को जानना। वहां स्तुति का अर्थ है जाने हुए गुणों का वर्णन करना। आरती के दूसरे भाग स्तुति में परमात्मा के गुणों का वर्णन किया गया है। इस भाग के भी फिर तीन बन्द हैं और तीनों बन्द तुम शब्द से शुरू होते हैं–

तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी। पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।।
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता। मैं मूर्ख खल कामी कृपा करो भर्ता।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति। किस विध मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति।।

आरती के पहले भाग में उपासना, दूसरे भाग में स्तुति को जानने के पश्चात् तीसरे भाग प्रार्थना को भी जानें। जब हम ईश्वर के गुणों को जानेंगे तब ही उससे कुछ मांग सकेंगे। आरती का यह तीसरा भाग प्रार्थना भी तीन बन्द का ही है। पहले बन्द में मांग की है–

दीनबन्धु दुःखहर्ता रक्षक तुम मेरे। अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा मैं तेरे।।

और दूसरे बन्द में प्रार्थना है कि–

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा। श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा।।

और तीसरे बन्द में–

तन, मन, धन सब है तेरा। तेरा तेरे अर्पण क्या लागे मेरा।।

परमात्मा से प्रार्थना है कि अपना सब कुछ तुम्हारे अर्पण कर दूं ऐसी सुबुद्धि दो। आरती में तीन भाग उपासना, स्तुति और प्रार्थना हैं। हर भाग में तीन बन्द हैं और आरती कितनी पवित्र है। यदि तीन वाली बात सत्य हो तो यह भी अशुभ हो जाए। इस शरीर के भी तीन भाग हैं–पहला सिर, दूसरा–धड़ और तीसरा–पैर।

धर्म में रुचि रखती हो। धर्म के भी तीन अक्षर हैं–ध+र्+म। धर्म से दया पैदा होती है। दया में भी तीन अक्षर द+य्+आ हैं। धर्म सत्य मार्ग पर चलना सिखाता है। सत्य भी स+त्+य तीन अक्षरों वाला है। सत्य बोलने से हर्ष होता है। हर्ष में भी तीन अक्षर हैं–ह+र्+ष।

इसी प्रकार घरेलू स्त्रियां सारा दिन काम में जुटी रहती थीं। एक विश्राम का दिन रख दिया गया जब वह इकट्ठे बैठ कर मन बहलावा कर लें। जब यह बातें निश्चित हुईं उस समय आजकल वाला जमाना न था। न तो स्त्रियां क्लबों में जाती थीं, न कोई आपस में मिल बैठने का स्थान या बहाना था। एक दिन विश्राम करके आपस में दिल बहलावा कर लेती थीं। किसी कबीले ने इस कार्य के लिए बृहस्पतिवार का दिन निश्चित कर लिया तो किसी नगरवालों ने शनिवार का। परन्तु इन निश्चित दिनों में कपड़ों का धोना किसी प्रकार का अपशकुन नहीं है। इसी प्रकार माताएं उत्साहित करती थीं कि बहुएं बेटियां प्रातः उठकर सफाई करें और जो आलस्य में पड़ी रहती थीं, उनको झिड़कियां मिलती थीं कि प्रातः उठकर घर साफ क्यों नहीं किया। और जब वे शाम को झाड़ू पकड़ती थीं तो उनको माता–पिता की और भी डांट मिलती थी। उनको सिखाया जाता था कि यह काम प्रातः का है सायं का नहीं। यह नहीं किसी कारण वश यदि दोपहर के बाद घर गन्दा हो जाए तो सायंकाल सफाई करनी ही नहीं। सायंकाल को सफाई का करना किसी प्रकार से न

अशुभ है न अपशकुन। यह तो आलस्य का प्रतीक है या अस्वाभाविक वातावरण में पैदा होने का प्रतीक है।

कोई दिन अशुभ नहीं, कोई दिन शुभ नहीं। गुरु वशिष्ठ ने शुभ दिन बताया जब महाराजा राम चन्द्र जी का राजतिलक किया जावे, परन्तु वह दिन तो अशुभ सिद्ध हुआ और भगवान् राम चन्द्र जी को राज पाट मिलने के बजाय वनवास मिला। शुभ और अशुभ दिन राशि को सम्मुख रख कर बताए जाते हैं। सीता और सूर्पणखा की एक ही राशि थी परन्तु दोनों की किस्मत जुदा-जुदा थी। सीता को माता जानकर संसार ने पूजा है परन्तु क्या किसी ने सूर्पणखा से प्यार किया है। राम और रावण की एक ही राशि थी। राम के नाम हम सब गर्व करते हैं। कोई अपना नाम राम रखता है तो कोई रामदास। परन्तु क्या किसी ने अपने पुत्र का नाम रावण भी रखा है? राम की तकदीर कि वह भगवान् हो गए, पर रावण एक राक्षस। कृष्ण और कंस की भी एक ही राशि थी। कहां कृष्ण योगिराज बने और कंस का वह अन्त हुआ कि आने वाली कोई भी पीढ़ी कंस को क्षमा नहीं करेगी। कुछ लोग यह कहते हैं कि शुभ दिन तलाश करें जिस दिन कोई नया धंधा शुरू करना है। या फिर विवाह की तिथि निश्चित करनी है या फिर चुनाव लड़ने हैं इत्यादि। परन्तु क्या शुभ दिन दिखाने पर भी शादी में विघ्न नहीं पड़ा। क्या शुभ दिन पर भी कारोबार ठप्प नहीं पड़ा? क्या शुभ दिखाने वाला चुनाव नहीं हारा? होनी को तो होकर ही रहना है। उसको टालने का उपाय नहीं। होनी क्या है? आपके अच्छे कर्मों का फल और बुरे कर्मों का दण्ड जोकि आपको मिलना ही मिलना है। नया कार्य किसी दिन भी आरम्भ कर लें। यह तो आपका बैंक मनी डिपाजिट है जिस दिन भी चाहो निकलवा लो। होनी क्या है? बुरे कर्मों की सजा जो कि मिलनी ही मिलनी है। कहीं भाग लो, कोई उपाय कर लो। कोई रोक नहीं सकता। कोई शुभ दिन तलाश कर लो यह दण्ड तो मिल कर ही रहेगा। लोगों में भ्रम है कि उपाय करने से होनी टल जाएगी। यह तो ठीक है कि ''मैन प्रपोजेज एण्ड गॉड डिसपोजेज'' अर्थात् मनुष्य एक प्लान बनाता है और ईश्वर उसको ढा देता है क्योंकि ईश्वर ने उस व्यक्ति को उसके कुकर्मों की सजा देनी होती है और उसके प्लान को पूरा नहीं होने देना। परन्तु यह नहीं हो सकता कि ''गॉड प्रपोजेज एण्ड मैन डिसपोजेज'' अर्थात् परमात्मा एक प्लान बनावे कि मैंने किसी व्यक्ति को क्या दण्ड देना है और मनुष्य उपाय करके ईश्वर के प्लान को फेल कर देवे। यह कभी नहीं हो सकता। ईश्वर के रचित प्लान को कोई भी फेल नहीं कर सकता। ईश्वर के क्षेत्र में है फल या सजा देना और कर्म करना मनुष्य के अधिकार क्षेत्र में है। गीता में भी यह कहा है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

अर्थात् तेरा अधिकार केवल कर्म तक ही सीमित है इससे अधिक नहीं। सो उठो और इन भ्रमजालों से बाहर निकलो और वास्तविकता की ओर बढ़ो।

अजय टंकारावाला

(डॉ. आनन्द अभिलाषी जी की पुस्तक से प्रेरित)

वैदिक संस्कृति के सुदृढ़ संरक्षक

❒ त.शि.क.कण्णन

सन् 1964 की सर्द भरी सन्ध्या। हनुमान रोड आर्य समाज के एक उत्सव में स्व. लाल बहादुर जी शास्त्री पधारते हैं। मान्य प्रधानमन्त्री जी के स्वागत के लिये न्यायमूर्ति मेहरचन्द महाजन, श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री सांसद आर्य समाज के अध्यक्ष, मन्त्री के साथ श्री रामनाथ जी सहगल आदि सज्जन प्रतीक्षा कर रहे हैं।

उत्सव की समाप्ति पर श्री प्रकाशवीर जी ने श्री श्रीयुत् सहगल जी से परिचय कराया था। यह परिचय इतना सघन था कि मैं सहगल जी के परिवार का एक सदस्य हो गया। आज अर्धशती (50 वर्ष हो रहे हैं) बीत रही है। पर आत्मीयता का वही सहज अबाध बन्धन। शायद उन्होंने कहीं पढ़ा था'' आत्मवत् सर्वभूतेषु'' सभी व्यक्तियों को अपना बना लो। जीवन में पारस्परिक मिलन में जो भी उनके सम्पर्क में आया, वह व्यक्ति उनका अपना हो गया। यह उनके स्वभाव की गरिमा है। श्री सहगल जी हृदय की विशालता तथा उदारता की साक्षात् सदाशया मित्रता की प्रतिमूर्ति हैं। आर्य समाज के सभी कार्य संचालन में भद्रता तथा शिष्टता का उनका अपना अप्रतिम योगदान है। सर्व मैत्री भाव उनके उदात्त चरिया का एक मांगलिक अंश है। ''सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु'' उनकी प्रीतिपरक पंक्ति है, मनुष्य में मानुष भाव, विश्वास भाव को उन्होंने प्राथमिकता दी है।

यह भी कितने आश्चर्य की बात है कि हम दोनों ही श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री के अन्त तक स्नेहपात्र रहे हैं।

श्री सहगल जी का विचार है कि उच्च एवं श्रेष्ठ होकर मानव समाज के बहुविध विकास के लिए कल्याण के लिए, कर्त्तव्य पालन करते रहे। अपने अन्तस् के कलुष को दूर करने में वे सदा सजग रहे हैं। किसी भी सार्वजनिक कार्य को सफलता से निभाना उनकी कार्यशैली की एक रमणीय विलक्षणता है।

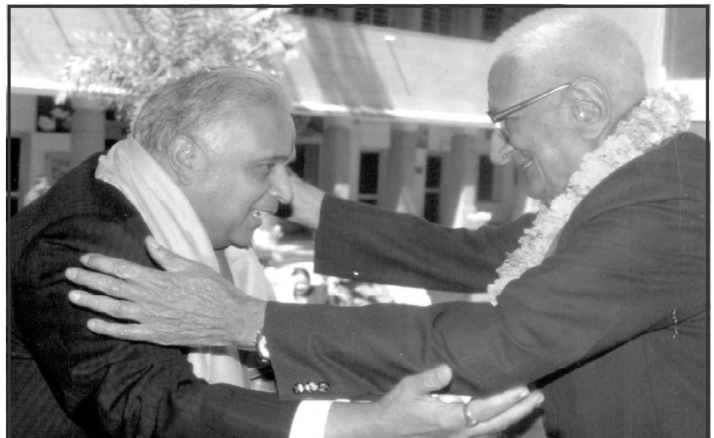

डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी में आयोजित यज्ञ पर श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री टंकारा ट्रस्ट एवम् उपप्रधान डी.ए.वी. के जन्मदिवस पर विशेष आहुतियों से उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु की कामना की गई। इसी अवसर पर डी.ए.वी. के प्रधान श्री पूनम सूरी जी जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सहगल जी को फूल माला डालकर शुभकामनाएं देते हुए।

किसी भी आर्य समाज का छोटा या बड़ा कोई भी कार्यक्रम क्यों न हो, उस समारोह में उनकी उपस्थिति उस समाज के प्रति एक अगाध निष्ठा का, मनोभय अविचल आस्था का सम्मिश्रण है। सार्वजनिक समारोह में भाषण, भजन, भोजन के संचालन में उनका अद्वितीय योगदान होता है। कभी-भी न थकने वाले उद्यमी आर्य सेवक। आर्य समाज के

(शेष पृष्ठ 26 पर)

वैदिक संस्कृति से पराङ्मुख नारी

❐ प्रो. वेद साहनी

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास मे **''मातृमान पितृमान आचार्यवान् पुरुषों वेद:''** उद्धृत करते हुए सिद्ध किया है कि मनुष्य ज्ञानवान तभी बन सकता है जब उसको माता-पिता और आचार्य का वरद हस्त प्राप्त हो। सभ्यता, संस्कृति में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कराने में माता का स्थान सर्वोपरि माना गया और उसे एक सृजनात्मक-शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है। माता से बढ़कर बालक को परिवार, समाज और राष्ट्र हित में उसकी योग्यता का विकास करने और सुसंस्कार देने में कोई और सक्षम नहीं हो सकता। वस्तुत: सतयुग में नारी वेदों की विदुषी, कला कौशल पारंगत, कुशल शासक, प्रशासक एवं संकटकालीन स्थिति में शत्रु के दाँत खट्टे करने वाली वीर योद्धा थी

रामायण काल में भी यत्र-तत्र इसी प्रकार के उदाहरण देखने सुनने को मिलते हैं। नारी केवल वेद-वेदांग में ही पारंगत नहीं बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, पति की अर्धांगिनी के रूप में, कन्धे से कन्धा मिला सहयोग करती थी। उदाहरण स्वरूप कैकयी युद्ध क्षेत्र में जब राजा दशरथ के रथ पर रथारूढ़ थी तब अकस्मात रथ का पहिया टूट गया, अत: कैकयी ने ऐसी स्थिति में रथ के पहिए को सम्भाला ही नहीं बल्कि विजय भी प्राप्त कराई इतिहास साक्षी है कि वैदिक नारी मैत्रेयी, अनुसुया, गार्गी, विद्योतमा आदि केवल विदुषी ही नहीं बल्कि शास्त्रार्थ में भी दक्ष थीं तब वे पुरुषों से किसी रूप में कम भी न थीं

महाभारत काल में नारी को अपमानित होने हेतु विवश होना भी पड़ा। उदाहरण स्वरूप द्रोपदी के चीर हरण के पश्चात् वह निरन्तर पतन के गर्त मे गिरती ही गई इस को ''पैरो की जूती कहा गया और लिखा गया, नारी की छाया पड़त अन्धा होत भुजंग, तथा ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी'' इसी अपमानित नारी को ''नरकस्य द्वार'' **''स्त्री शूद्रो न धीयेतामिति श्रुतै:''**। क्या-क्या नहीं सुना नारी ने, अपने लिये? प्रत्येक परिस्थिति को अपना ही प्रारब्ध मान झेलती रही।

विचारणीय है कि मनुष्य कैसे स्वार्थ लिप्सा के वशीभूत राक्षस का रूप धारण कर लेता है। यह सत्य तो है कि मनुष्य का मस्तिष्क भी कम्प्यूटर की भाँति है, जिसमें कई साफ्टवेयर होते हैं। मनुष्य की जिसमें उसकी रुचि, वृत्ति होती है उसी साफ्टवेयर को खोलता है। मनुष्य के मस्तिष्क के कम्प्यूटर में भी तीन साफ्टवेयर हैं। 1. दैवी 2. मानवी 3. दानवी। वातावरण से मनुष्य प्रभावित रहता है, जो दृश्य उसे अच्छे लगते हैं वही साफ्टवेयर को क्लिक करता है। आज का मनुष्य राक्षसी साफ्टवेयर के दुष्प्रभाव से अछूता नहीं है पूर्णतया विलासी, लोभी, सियार रूप बन चुका है। प्रात:काल की दिनचर्या अखबार से होती है जिस में नारी के शरीर की नुमाईश देखने को मिलती है मनोरंजन के नाम पर सिनेमा, टीवी. इत्यादि इनमे भी नारी का प्रदर्शन माँ, बहन रूप में नहीं भोग्य पदार्थ रूप में दिखाया जाता है। अत: आज सभी रिश्ते कंलकित हो गए हैं।

इसी प्रकार भारतवर्ष की महान विदुषियों की ओर ध्यान जाता है। मन दु:खी हो कहता है यदि सीता, सावित्री, गार्गी आदि देवियां जिन्होंने आर्यावर्त्त का नाम सूर्य, चन्द्रमा की तरह आलोकित किया था यदि इन में से कोई आज किसी दिशा से भूलवश आ जाएं तो वह अपनी ही शर्म से लज्जित हो जाएं। उनके पास आज की नारी को शाप देने के लिये भी कोई शब्द न मिले संस्कृति की विकृति का भयंकर दूषित प्रभाव समाज पर पूर्णतया पड़ रहा है। युवतियों की वेश-भूषा इस प्रकार की बन रही है जिसमें अधिकाधिक अंगों का प्रदर्शन हो। तात्पर्य यह है कि युवा-पीढ़ी की बालिकाओं में अपनी लज्जा की लाज रखने की कतई चिन्ता भी नहीं है बल्कि उन्हें उजागर करने में गौरव की अनुभूति करती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे दुकानदार अपने मूल्यवान पदार्थों का प्रदर्शन, दुकान के प्रदर्शन पट्ट शीशे के शोरूम बना कर करता है जिसे जो पसन्द हो वह उसे प्राप्त कर लें। बुद्धि इस बात को समझने में अक्षम है कि नारी इतनी निर्लज्ज क्यों हो रही है? क्यों अपने 'ब्रह्मपद' को ठुका रही है? क्यों पूर्व पूज्या मातृ-शक्ति का अपमान कर रही है? भारत देश में नदियों के नाम भी देवियों के नाम पर हैं जैसे-गंगा, यमुना, कावेरी, नर्मदा इत्यादि। ये नदियाँ मानव जाति का जहाँ लालन-पालन करती हैं वहाँ जब इनमे पानी अधिक छोड़ दिया जाता है तो ये अपनी सीमायें भी लांघ जाती हैं। फलस्वरूप तबाही का मंजर भी पार कर देती है। वस्तुत: पुरुष प्रधान समाज ने नारी पर इतना दबाव बनाया कि नारी ने अपने सम्मान को पाने के लिय सभी मर्यादा रूपी सीमाएं लांघ दी है जो नारी कल सीता थी आज सूर्पनखा राक्षसी बन चुकी हे। इतनी संवेदनहीन हो जाएगी कोई सोच भी नहीं पाता।

दु:ख है मीडिया भी आज सभी पारिवारिक, सामाजिक जिम्मेदारियों को भूलता जा रहा है। यह फैशन, ग्लैमर तथा अर्धनग्न प्रदर्शन के नाम से युवा-वर्ग की अंधे कुए में ढकेलने की नादानी कर रहा है। मीडिया की इन काली करतूतों पर हिन्दुत्व की वकालत करने वाले संगठन मौन धारण किए बैठे हैं वैदिक धर्मनुयायी भी अपनी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी को ही प्रभुत्व दे रहे हैं। मैकाले की शिक्षा-नीति कैंसर की तरह जड़े दूर-दूर तक फैला रही है। हम अपनी सभ्यता संस्कृति से कोसों दूर हुए जा रहे हैं। हमारी ही मूर्खता के कारण मैकाले की दूरदर्शिता सफल हो रही है। उसका स्वप्न पूरा हो रहा है और हम अद्योपतन की ओर गिरते जा रहे हैं।

हमारे भारत को मीडिया ने पूर्णरूपेण 'इण्डिया' बनाने का प्रण कर रखा है। टेलिविजन का प्रत्येक चैनल में अपने नाम के अगे 'इण्डिया' शब्द जोड़ रखा है। कार्यक्रमों के नाम भी जागो इण्डिया, डांस इण्डिया डांस, इण्डियन आईडियल, क्रिकेट इण्डिया स्पष्ट करता है कि इण्डिया पर आतंकवादी हमला जैसे वाक्यों का उपयोग बढ़त जा रहा है। यही भारत इण्डिया रूप में दोगला इंग्लैण्ड बन जाएगा क्या यह किसी को चिन्ता है अपने भविष्य की? वैदिक धर्म सभ्यता, संस्कृति की? मर पर मार खाए जा रहे हैं फिर भी मूक हैं।

अलंकारिक रूप में पुरुष 'अग्नि' और स्त्री 'घी' की संज्ञा दी जाती है। परिणाम जिसका सर्वनाश ही है अत: नारी यदि पूर्णरूपेण मुक्त और स्वछन्द जीवन व्यतीत करना ही उसने लक्ष्य सोच लिया है तो उसे शक्ति की उपासना करनी ही होगी दुर्गा और भवानी के समान बनना ही होगा अपनी मान, लाज की प्रतिष्ठा हेतु जूडो- कराटे तथा शस्त्र-शास्त्र विद्या में निपुणता प्राप्त करनी ही होगी।

हे नारी! अपने अतीत का स्मरण कर, अपने गौरव-मय स्वरूप को दुहरा। वेद तुझे किन-किन अलंकरों से सज्जित, पुष्पित करता है। क्या आज तुझे अपना गरिमामय स्वरूप का तनिक भी ध्यान नहीं है? जिस सौन्दर्य का प्रदर्शन करने में गौरव की अनुभूति मानती है वह तो धूप-छाया की तरह प्राकृतिक है, जो आज है कल नहीं। नीचे देख ऊपर नहीं, पैरों को सम्यकतया मिला कर उचित रीति से चल। ज्ञान सम्पन्न होकर शिष्टतापूर्ण व्यवहार ही तुझे 'साम्राज्ञी' के पद से विभूषित करेगा। सर्वोच्च और सम्मानीय पदों से विभूषित करेगा।

हे मातृ शक्ति! भारतीय स्त्री का स्वरूप तो माता का स्वरूप है वेदानुकूल **''माता निर्माता: भवति।''** ऋग्वेद 8.16 के अनुसार माता को स्पष्ट ही भगवान के समस्त का आसन प्रदान किया है। सीमाओं के परित्याग का अर्थ, मर्यादा का उल्लंघन और पश्चिम का अनुकरण एवं मीडिया का हस्तक्षेप कतई नहीं वस्तुत: हमारी भारतीय वैदिक संस्कृति से ही हमारा, हमारे परिवार, समाज, देश एवं राष्ट्र का कल्याण है नेपेलियन ने कभी कितना सत्य ही कहा था-**''तुम मुझे एक संस्कारित माँ दो, मैं तुम्हें समस्त स्वर्गसम सुख सुविधाएँ दूंगा''**

परमात्मा करे नारी ''तमसो मा ज्योर्तिगमय'' के नियमों का पालन करते हुए अपने अस्तित्व को बचाने व नारी के वैदिक स्वरूप को पाने के लिये मां, पत्नी के रूप में स्वयं एवं अपनी संतानों को सुसंस्कारों से सज्जित करने में पूर्ण योगदान दें। ऋषि दयानन्द के ज्योतिस्तम्भ रूपी शिक्षा नीति को अपनी उदात्त भावनाओं से संस्कारित कर कर्त्तव्यों का उचित निर्वाह कर सकें। नारी ही तो परिवार की केन्द्र बिन्दु और धुरी है यदि यही टेढ़ी हो गई तो इसके आधार पर चारों ओर घूमने वाला पहिया भी लड़खड़ा जाएगा। वैदिककालीन हमारे पवित्र रिश्तों की बगिया फिर से स्वत: महक सकती है यदि हम गुरुकुल शिक्षा पद्धति के सिद्धान्त को प्रोत्साहित करें। महर्षि द्वारा निर्दिष्ट शैक्षणिक एवं सामाजिक स्थिति जब तक देश मे लागू न होगी तब तक नारी जागृति, अधिकार, समता, सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापित न हो सकेगा।

5-क-11, जवाहर नगर, जयपुर (राज.) 302004

प्रति दिन एक नेक काम करें!

❐ कमलेश पहुजा

हम जब शाम को अपना काम समाप्त कर घर लौटते हैं तब एकांत में बैठकर दिन भर में किए गए कामकाज का मूल्यांकन करते हैं। दिन भर की मेहनत के बाद हमें यह लगता है कि हमने कुछ भी ऐसा सार्थक नहीं किया जो हमारे खाते में जमा हो सके। अनेक बार हम ऐसा महसूस करते हैं कि हमने काम तो दिन भर में बहुत किया परन्तु उनका ठोस परिणाम कुछ भी नही निकला। अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए भी कई बार हम अपने खाते में शून्य ही दर्ज पाते हैं। यह स्थिति हमें व्यथित करती है। हमें अहसास होने लगता है कि हम हीरे के समान अनमोल जीवन को व्यर्थ गवां रहे हैं। कभी-कभी हम सोचते हैं कि जो काम हमने किया है उससे किसी को लाभ नहीं होने वाला समाज को उससे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। लेकिन, जिस समाज में हम रहते हैं, उस समाज के प्रति हमारा यह दायित्व बनता है कि हम उसे भी कुछ दें। समाज से केवल लेना स्वस्थ सामाजिक विकास की दृष्टि से अनुचित है इसलिए हम अपने कामकाज के दायित्व के साथ-साथ सामाजिक दायित्व के प्रति भी थोड़े से चिंतत और मुस्तैद हो इसका अभिप्राय यह है कि हम ऐसा काम अवश्य करें जिससे हमें मानसिक संतोष हो।

सवाल यह उठता है कि मानसिक संतोष प्राप्त करने के लिए हम मुस्तैद कैसे होंगे? इसकी अकेली शर्त यही है कि हम प्रतिदिन एक ऐसा नेक काम करें जो हमें मानसिक संतोष दे। यदि हम शिक्षक हैं तो एक निर्धन विद्यार्थी की पढ़ाई-लिखाई में उसकी अतिरिक्त सहायता करे हमारा यह गंभीर प्रयास हो कि हमारे सहयोग से वह विद्यार्थी कुछ और बेहतर करके दिखाए। उसकी पढ़ाई-लिखाई की नींव मजबूत हो ताकि भविष्य में वह एक बेहतर नागरिक बन कर समाज को कुछ सार्थक दे सके।

यदि हम कुशल व्यवसायी हैं तो अपने व्यवसाय में नैतिकता को आधार बनाएं। स्थिति का लाभ उठा कर अतिरिक्त धन कमाने के लिए प्रयास न करें। लाभ उतना कमाएं जिससे हम अपना काम करते हुए समाज के प्रति भी अपनी जवाबदेही को पूरा कर सकें। इससे दो काम होंगे। हमारे अपने स्वयं की तथा हम पर निर्भर परिवार के सदस्यों की उदर पूर्ति होगी साथ ही हमें यह संतोष होगा कि हम समाज के प्रति मुस्तैद हैं।

इस संवाद का अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति जहां है वह इस हकीकत को सदैव ध्यान रखे कि जिस समाज और देश में रहते हैं उससे हम केवल लें ही नहीं उसे कुछ सार्थक दें भी। ऐसा करके हम जहाज एक ओर बेहतर नागरिक होने की अपनी इच्छापूरी कर सकेंगे वहीं समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए भी योगदान दे सकेंगे।

वस्तुत: मानसिक संतोष प्रदान करने वाला कोई भी कार्य नैतिक मूल्यों के पोषण से जुड़ा हुआ है। मानसिक संतोष हमें जहाँ एक ओर अनेक प्रकार की मानसिक व्याधियों से बचाता है, वहीं दूसरी ओर हम स्वयं को साहस से परिपूर्ण पाते हैं। यह स्थिति स्वस्थ सामाजिक संरचना के लिए अनिवार्य है इसलिए हमें प्रयास करना चाहिए कि प्रतिदिन एक नेक काम करें। यह हमें तमाम प्रकार के अवसाद से बचाएगा।

टंकारा समाचार **के प्रसार में सहयोग दें**

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

नया वर्ष 1 जनवरी
से नहीं चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से क्यों मनायें?

❐ कन्हैयालाल आर्य

यूनान मिश्र रोमां सब मिट गये जहाँ से,
कोई बात है कि मिटती हस्ती नहीं हमारी।

यह बात किसी कवि ने कही है तो उस के पीछे उसकी मूल भावना यही थी कि हमारी संस्कृति सबसे पुरानी है। आज विश्व में मुख्यत: तीन संस्कृतियाँ काम कर रही हैं। ईसाई संस्कृति केवल 2012 वर्ष पूर्व की है। मुस्लिम संस्कृति 1400 वर्ष पूर्व की है। इससे पूर्व जो संस्कृति थी वह मूल संस्कृति थी, वह संस्कृति थी वेद की संस्कृति। आज पूरा विश्व वेद को सबसे प्राचीन पुस्तक मानता है। हमारी सभ्यता का स्रोत भी सृष्टि का आदिकालीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। विश्व के सभी इतिहासकार इन मान्यता से सहमत हैं कि ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है। इसी मान्यता के आधार पर संयुक्त राष्ट्र संघ(UNO) ने ऋग्वेद को विश्व सभ्यता की आदि धरोहर स्वीकार कर लिया है। यह वैदिक मान्यताओं की विजय है। वैदिक संस्कृति के अनुसार चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा (पहली तिथि) से नववर्ष का प्रारम्भ होता है। यह नववर्ष किसी न किसी रूप में पूरे भारतवर्ष में उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्या है इस दिन का वैज्ञानिक महत्त्व?

यूरोपीय सभ्यता के ग्रेगोरियन कैलेण्डर के अनुसार पहली जनवरी को नववर्ष मनाया जाता है लेकिन विक्रमी सम्वत् के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि को नववर्ष का प्रारम्भ माना जाता है चाहे हम प्रतिदिन के व्यवहार में दिन, सप्ताह, मास और वर्ष की गणना में अंग्रेजी तिथियों का प्रयोग करते हैं परन्तु आज भी हम धार्मिक अनुष्ठानों एवं मांगलिक कार्यों में विक्रमी सम्वत् की तिथियों का निर्धारण ही करते हैं।

संसार का प्रत्येक समुदाय अपने यहाँ प्रचलित वर्ष के प्रथम दिन को एक पर्व के रूप मे मनाता है। जिस प्रकार ईस्वी वर्ष के अनुसार प्रथम जनवरी को 'न्यू ईयर डे' या नववर्ष के रूप मे मनाया जाता है उसी प्रकार भारतवासी सृष्टि के आदिकाल से नवसम्वत्सर के पहले दिन को एक पर्व के रूप में मनाते आ रहे हैं। भारतीय प्राचीन इतिहास परम्परा में इसको 'सृष्टि सम्वत्सर' कहते हैं। यह मान्यता है कि सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन से हुआ था। इसका अभिप्राय हमे यह समझना चाहिये कि इस दिन से सृष्टि व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ था। डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी मनुस्मृति विशेषज्ञ के अनुसार ज्योतिष के ग्रन्थ हिमाद्रि में इस इतिहास को बताने वाला एक श्लोक आया है।

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तथा सूर्योदये सति।

इसका भाव यह है कि सृष्टि की रचना हो चुकी थी अर्थात् सबसे पूर्व परमपिता परमात्मा ने पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश का अपनी ईक्षण शक्ति से निर्माण किया तत्पश्चात् वनस्पति जगत का निर्माण किया, फिर कीट पतंग, पशु जगत का निर्माण किया तब चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को ब्रह्मा ने इस मानव जगत का निर्माण किया अर्थात् एक व्यवस्था का प्रारम्भ समाज में हुआ और उसी दिन सूर्य के उदय के साथ काल की गणना प्रारम्भ हुई।

कुछ लोग सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब सतानवें करोड़ उनतालिस लाख उन्नचास हजार एक सौ तेरह वर्ष पूर्व मानते हैं परन्तु मानवी सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब छयानवें करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ तेरह वर्ष पूर्व हुआ परम पिता परमात्मा यह चाहते थे कि जब मानव इस संसार मे आये तब उसके लालन पालन की सुख सुविधाओं की पहले से व्यवस्था हो जिस प्रकर सन्तान के उत्पन्न होने से पूर्व माता के स्तनों में दूध का निर्माण हो जाता है उसी प्रकार वह जगत माता यह चाहती थी कि जब मैं मानवी सृष्टि का निर्माण करूँ तो उससे पहले पृथ्वी, जल, सूर्यादि ग्रह, वनस्पति जगत का निर्माण करूँ तभी मैं मानवी सृष्टि को लाऊँ। तभी यह उचित लगत है कि मानवी सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब छयानवे करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ बारह वर्ष पूर्व ही सूर्य उदय के प्रथम दिवस को ही हम सृष्टि सम्वत्सर मानते हैं। तब से भारत के लोग इस दिन को एक उत्सव के रूप में मनाते चले आ रहे हैं। सचमुच वह दिन कितना सुहावना रहा होगा जब इस सृष्टि के व्यवहार का एक व्यवस्था के रूप में प्रारम्भ हुआ होगा।

यह सम्वत्सर (ज्ञान का स्रोत) इस बात का संकेत देता है कि विश्व में भारत की संस्कृति सभ्यता इतिहास सबसे प्राचीन है। काल गणना का इतना पुराना लेखा जोखा किसी देश और समाज में नहीं मिलता। इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि विश्व में ज्ञान का उद्भव और विकास सबसे पहले भारत में ही हुआ था क्योंकि बिना ज्ञान के न तो कोई दिन, मास, वर्ष, युग आदि का वर्गीकरण कर सकता है और न ही काल गणना की परम्परा को ही सुरक्षित रखा जा सकता है। हम भारतवासियों के लिए यह गर्व की बात है और गौरव का विषय है कि हम विश्व की सबसे प्राचीन स्मृतियों को संजोये हुए हैं। सबसे प्राचीन तथ्यों को सुरक्षित रखे हुए हैं। यह नव सम्वत्सर विश्व सभ्यता की अमूल्य धरोहर है। (वसन्त ऋतु से प्रारम्भ) चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा वसन्त ऋतु में आती है। वसन्त का प्रभाव न केवल मनुष्यों बल्कि पेड़-पौधों पर भी देखा जाता है। वास्तविकता यह है कि इस ऋतु में सम्पूर्ण सृष्टि में सुन्दर छटा बिखर जाती है। इस ऋतु में हमें सर्दी से छुटकारा मिल जाता है बल्कि पेड़-पौधों पर हरियाली छा जाती है, पशु पक्षी भी मस्ती में आ कर झूमने लगते हैं। यह आनन्द क्या हम अंग्रेजी नववर्ष की पहली जनवरी को अनुभव कर सकते हैं। यदि नहीं तो क्यों हम उस तिथि से चिपके हुए हैं? नया सम्वत् अर्थात् भारतीय नववर्ष के कारण हमारे मन में नई उमंगों का संचार हो जाता है जो पहली जनवरी को कभी नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त विक्रमी सम्वत् के मासों के नाम आकाशीय नक्षत्रों के उदय और अस्त होने के आधार पर रखे गये हैं। यह बात तिथियों पर लागू होती है। वे चन्द्रमा और सूर्य की गति पर आधारित होते हैं। इस प्रकार विक्रमी सम्वत् वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि जब भारत पर शक जाति का शासन प्रारम्भ हो गया तो उसने इस सम्वत्सर प्रथा को समाप्त कर दिया। बाद के वर्षों में सम्राट विक्रमादित्य ने 2068 वर्ष पूर्व इसे फिर से प्रारम्भ किया तब से लेकर आज तक यह तिथि विक्रम सम्वत् के पहले दिन के रूप में मनायी जाती है महाराजा विक्रमादित्य न केवल दानी एवं वीर पुरुष थे बल्कि दीन दुखियों के सहायक एवं देशभक्त थे। उन्होंने जो सम्वत् प्रारम्भ किया वही आज विक्रमी सम्वत के नाम से जाना जाता है। ईरान में इस तिथि को 'नैरोज' अर्थात् नववर्ष के रूप में मनाया जाता है।

चैत्र से लेकर बैसाख के मास तक भारत के अलग-अलग राज्यों में भिन्न-भिन्न मान्यताओं के अनुसार नववर्ष तथा अन्य विशेष उत्सव मनाये जाते हैं। यह दिन जम्मू-कश्मीर में नवरेह, पंजाब में बैसाखी, महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, सिन्धी में चेतीचंड, केरल में विशु, असम में रोंगली बिहू आदि के रूप में मनाया जाता है। आन्ध्र में यह पर्व उगादि के नाम से मनाया जाता है। (उग्रादि) युगादि का अर्थ होता है मानवी सृष्टि रचना का प्रथम दिन। इस प्रकार इस दिन को पर्व के रूप में आदि काल से यह परम्परा चली आ रही है।

कुछ लोग इस प्राचीन सम्वत्सर पर सन्देह प्रकट करते हैं। वे विश्वास नही करते कि सृष्टि इतनी प्राचीन भी हो सकती है और इतने प्राचीन सम्वत्सर की गणना को सुरक्षित रख पाना कैसे सम्भव हुआ होगा? मैं उन लोगों के सन्देह निवारण के लिए एक प्रमाण देना चाहता हूँ कि यह काल गणना किस प्रकार सुरक्षित रही है। हम सभी भारतवासी जानते हैं कि प्रत्येक यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठानों एवं विवाह आदि संस्कार के समय पुरोहित यजमान से जो संकल्प कराता है उस समय वह यजमान से 'जम्बू द्वीपे, भरत खण्डे, आर्यावर्त अन्तर्गते' आदि शब्दों का उच्चारण करा कर उस देश, शहर, गाँव, वंश के साथ कालगणना भी बुलवाता है। उसमें युग, मास, वर्ष के साथ प्रहर अैर पल का भी उच्चारण करवाता है। इस प्रकार दिन प्रतिदिन की उच्चारण परम्परा से यह कालगणना सुरक्षित चली आ रही है। हमारे ऋषि मुनियों ने काल गणना को सुरक्षित रखने का यह बुद्धिमता पूर्ण उपाय निकाला है कि उसको हमारे दिन प्रतिदिन के व्यवहार से जोड़ दिया अन्यथा इसको सुरक्षित रखने का कोई और उपाय नहीं हो सकता क्योंकि कभी-कभी प्राकृतिक प्रकोपों से, तो कभी मानवीय उथल-पुथल (आक्रान्ताओं द्वारा साहित्य को नष्ट करने) से साहित्य तो नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। यदि केवल साहित्य मे यह काल गणना होती तो कभी भी नष्ट हो जाती वैसे तो हमारे उपलब्ध साहित्य में भी इस सम्वत्सर क पर्याप्त विवरण मिलता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में इस काल गणना का पूरा विवरण दिया है। जिज्ञासु जन इस ग्रन्थ का अवलोकन करके इस विषयक विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

इसी पवित्र दिन पर 10 अप्रैल 1875 को युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। भगवान राम का राज्याभिषेक, महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक, आर.एस.एस. के संस्थापक डॉ. हेडगेवार का जन्मदिन, महाराज शालिवाहन द्वारा हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में इसी दिन राज्य स्थापित करना आदि घटनाओं का संयोग भी इसी पर्व के साथ आता है।

आइये, यह दिवस अर्थात् चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा अर्थात् प्रथम दिन (11 अप्रैल 2013) को पूरे उत्साह के साथ मनायें। यह केवल वर्ष का प्रथम दिवस नहीं है, यह तो भारतीय इतिहास और ज्ञान का गौरव दिवस है क्योंकि इतनी प्राचीन सभ्यता विश्व में किसी देश और समाज की नहीं है इसी चैत्र मास की प्रतिपदा (पहली) तिथि को ब्रह्मा जी ने सबसे बढ़िया दिन माना है। सृष्टि उत्पत्ति होने के बाद ब्रह्मा ने वेदों से ही लेकर आदिम व्यक्तियों, स्थानों और पदार्थों के नाम रखे थे। आज विश्व में सर्वत्र नये वित्त वर्ष का प्रारम्भ एक अप्रैल अर्थात् नवसम्वत्सर गणना वर्ष के आस-पास ही किया जाता है तो अर्थशास्त्री भी इसके महत्त्व को स्वीकार करते हैं। अतः प्रत्येक प्रकार से वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित इस भारतीय परम्परा के विक्रमी सम्वत् को ही नववर्ष से सम्बोधित करें और विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थों की वैदिक संस्कृति को पुनः जागृत करने के लिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही नववर्ष मानें। आइये इस नववर्ष के अवसर पर हम अच्छे संकल्प लेने का विचार करें।

नव सम्वत्सर पर मेरी सभी विश्ववासियों को शुभ कामनायें।

किसी कवि ने इस दिन के लिए निम्नलिखित पंक्तियों को लेखबद्ध किया है:-

नववर्ष का आगमन मंगलमय हो,
जीवन में नित नूतन हलचल मंगलमय हो।
मिटे तिमिर फैलें उजियारा कण-कण में।
आशाओं का स्वर्णिम आँचल मंगलमय हो।।

आर्य सदन, 4/45, शिवाजी नगर, गुड़गाँव। चलभाष : 09911197073

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

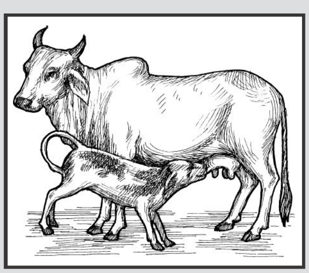

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

वायु

❐ त.शि.क. कण्णन

परम पिता परमात्मा अज्ञेय है उसकी रम्य रचना में उसके प्रिय पंचभूत भी अज्ञेय हैं। प्रभु की थाह नहीं है प्रभु के इन प्यारे पंचभूतों की थाह नहीं है।

पंचभूतों में वायु अपना सुदृढ़ अस्तित्व रखता है। वायु का मानव जीवन में अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक महत्व है। क्षणभर के लिए भी यदि हवा थम गई, वायु का चलन लुप्त हुआ तो समस्त विश्व का प्राणि जगत् तत् क्षण अपनी सत्ता शून्य, सुप्त। इस प्रभावशाली वायु का जल, अग्नि से निरन्तर सम्बन्ध है।

इतनी सरल हवा, वही हवा जब झंझावात मे बदल जाती है। मानव की मनीषा समझने से पूर्व चकर जाती है। सार्वजनिक घोषणा की जाती है तुम्हारे प्रदेश में आज रात हवा की तीक्ष्णता प्रति घण्टा 200 किलोमीटर होगी, मानव मन विक्षिप्त, संतप्त हो जाता है। पंचभूत के तेजस्वी पुत्र के तीक्ष्ण प्रहार को प्रकृति के अन्य अंग भी सहने में असमर्थ हो जाते हैं। अगले दिन प्रातः मानव सूर्य की रम्य रश्मियों में वायु के भीष्म चंचल क्रीड़ा को निहारता है तो मन मार कर रह जाता है, सैकड़ों वृक्ष अपनी सुगढ़ सत्ता से निरस्त होते पृथिवी पर झूलते हुए। हजारों कच्चे पक्के मकान, धरती पर समा जाते हैं। शहर का दर्शनीय 'हवा महल' भवन भग्न, नग्न, सुन्न अवस्था में प्रान्त का सर्वाधिक सम्पन्न परिवार, सड़क के साथ सटा खड़ा था। कल तक नयनों को मधुरिमा प्रदान करती लहरें अपने प्रकृति पुत्र के सहयोग से अपने ताण्डव नृत्य से गाँव शहर को आपूर्ण उजाड़ते हुए मिट्टी में मिला देते हैं। यह है पवन का रौद्र रूप।

'वातस्य तु महिमानं रथस्य, रूजन्नेति स्तनयन्नस्य घोषः
दिविस्पृग् यत्यरूणानि झणवन्नुतो एति पृथिव्या रेणुमस्यन्'

वायु के इस अपूर्व रथ की महिमा को देखो, यह सभी प्रकर की बाधा को तहस-नहस करता हुआ आ रहा है, कितना भयकर शोर है हवा का शक्ति पुंज यह आकाश तक ऊपर उठता है। सभी प्रान्तों को भयकर लाल करता हुआ पृथिवी की धूल को उड़ाता हुआ कितने वेग से कितनी शक्ति से आ रहा है। वैदिक ऋषि ने कभी अपने समय में 'सुनामी' को भयकर तूफान को भीषण आंधी का साक्षात्कार किया होगा आज का मनुष्य इस सुनामी की कल्पना से कांप उठता है। **'अरं जन्त प्र मानुषाः'** दृष्टि को झुलसा देने वाला वायु का विस्तार प्रकोष भी यहां उपलब्ध है। हे वायु तुम तो आकाश पृथ्वी को कम्पित करने वाले मरूतो तुममे कौन श्रेष्ठ है-

'नि वो यामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे जिहीत पर्वतो गिरि।'

हे वायु तुम तो पेड़ों की शाखाओं के समान पर्वतो को भी झकझोर कर देते हो।

वायु को हम देव शिल्प भी कह सकते हैं सभी पंचभूत देवशिल्प हैं। देवशिल्प अत्यन्त शक्ति सम्पन्न तथा प्रभु के आज्ञापालन में सबसे श्रेष्ठ समर्थक हैं मानव मन इन देवशिल्पों की कार्यविधि को देखकर श्रद्धा वश उनसे सम्पर्क स्थापित करने के लिए उनकी पूजा करना कर्त्तव्य समझता है। विश्व प्रपंच की प्रत्येक विभूति में मनुष्य को उस परम तत्व के दर्शन होते हैं। **'समोऽहं सर्वभूतेषु'** मैं तो विश्व के प्रति कण-कण में मानव जीव जन्तुओं में वृक्षों, पौधों वनस्पतियों में समान रूप से व्यवहार करता हूँ। प्रातः काल की हल्की, ठंडी हवा से मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है।

वेद की पंक्ति हैः-

''वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु न हृदे प्रण आयूंषि तारिषत्।''

ऋग्वेद 10.186

हवा हमें ऐसी औषधि प्रदान करो जिससे हमारा हृदय शक्ति शाली बने और हमारी आयु की वृद्धि करे।

शुद्ध वायु में ऐसे शोधक होते हैं। वे मनुष्य के समस्त विकारों को दूर करते हैं

जब हम यज्ञ करते हैं, तब यज्ञ की हवि की सुगन्ध को हवा चारों ओर फैलाता है।

'उपयाहि वीतये, वायो हव्यानि वीतये'
'यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः ततो नो देहि जीवसे।

ऋग्वेद 10.186.3

वायु, तुम्हारे पास तो अमृत कलश है। तुममें तो शुद्ध, सात्विक,स्वास्थ्य वर्धक तत्व हैं, उसमें से कुछ अंश हमें भी प्रदान करो ताकि पूर्ण स्वस्थ हो सकें। वायु के अन्दर ओषजन या प्राणवर्धक तत्व है, रोग निवारक तत्व हैं उन तत्वों को हमें प्रदान करो ताकि हम पूर्ण स्वस्थ हो सकें।

'वायु मातरिश्वा दधातु' वायु मातरिश्वा का अर्थ हे वह शक्तिशाली हवा जो जल अग्नि अदि अन्य प्राकृतिक तत्वो की सरक्षिका है। वह हमें उपलब्ध कराओ

अतः प्रातः काल की शीतल, मधुर हवा स्वास्थ्यवर्धक होती है जो शरीर मे ऊर्जा उत्पन्न करती है, प्रायः सभी रोगों के निवारण के लिए प्रातः कालीन भ्रमण आवश्यक माना गया है। इस वायु में प्रदूषण को दूर करने वाले तत्व होते हैं जो हमारे जीवन को सुदृढ़ स्वस्थ करते हैं।

अतः हमारे वेद मनुष्य को उपदेश देते हैं कि तुम जल वायु को प्रदूषित मत करो। आज हमारे देश में प्रदूषण बहुत ज्यादा बढ़ गया है और न ही शुद्ध अन्न मिल रहा है।

कारखाने से निकलता धुआं, कूड़ा, कचरा, टायर, रबड़ आदि का जलाना, पेड़ वृक्षों तथा वनों के विनाश से आज के मनुष्य का शुद्ध स्वस्थ शरीर एक प्रश्न चिन्ह बन गया है जीवन के हर क्षेत्र में प्रदूषण व मिलावट इतना ज्यादा हो गया है कि हमारी भूमि अन्न, जल, वायु, वन प्रदेश, फल-फूल वनस्पतियां साग सब्जी सभी में प्रदूषण बहुत ज्यादा बढ़ गया है।

आज स्थिति यह है कि यदि हम प्रदुषित हवा का सेवन करें तो अशुद्ध रक्त को फेफड़ों की सूक्ष्म नलिकाओं में व्याप्त अशुद्ध खून को न तो स्वच्छ हो पायेगी और न ही खून में फैले मल को बाहर निकालने में समर्थ हो पायेगी। आज की बिगड़ती हुई स्थिति को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ वर्षों में मनुष्य का सुख पूर्वक स्वस्थ होकर जीना एक समस्या हो जायेगी।

वैदिक कालीन ऋषि मुनियों ने प्रकृति के विभिन्न स्थलों का सम्यक अध्ययन किया था प्रभु प्रदत्त विशाल वन प्रदेश की महिमावान वृक्षों वनस्पतियों को अच्छी तरह समझ था। अतः उन्होंने हजारों वर्ष पूर्व वायु-जल-भूमि-आकाश-अग्नि अन्न की उपयोगिता तथा आवश्यकता

को अनुभव किया था। पर्यावरण की व्यापक शुद्धि के लिये सभी पदार्थों की स्वाभाविक वृद्धि के लिए हमें जागरूक किया था।

सेवाव्रती वायु प्रभु का एक ऐसा देव है जो समस्त प्राणिमात्र के लिए सेव्य है प्रकृति का अणु, सब रूप वायु को आत्मीय लगा उसी भाव से वह सेवा भी कर रहा है।

हमारे ऋषियों ने अपने ज्ञान एवं अनुभव के परिपेक्ष्य में ईश्वर के इन पंचभूतों का समीचीन रूप से प्रतिपादन किया है।

सरल, शीतल वायु का मनमोहक मन्त्र भी वेद में मिलता है। जब हल्की, मधुर हवा चलती है तब वृक्ष, पौधे, वनस्पतियाँ उसी दिशा में झूम जाती हैं। नदी, झील, झरने, समुद्र, तालाब का सुस्त पानी भी हवा के साथ ताल मेल रखते हुए उसके साथ मिल जाती है।

सं प्रेरते अनु वातस्य विष्ठा ऐन गच्छन्ति समनं न योषाः
तभिः सयुक् सरथं देव ईयते अस्य विश्वस्य भुवनस्य राजा।

ऋक् 10.168.2

मनुष्य को कितना प्यारा सन्देश मिलता है, वही हवा, जिसका विकराल रूप हमने पढ़ा है आज हवा की वाणी में मिठास है, मधुरता है,वायु का कथन है ''जीवन में सदा उग्र रूप नहीं रखना चाहिये (अपने व्यक्तित्व को इतना सुलभ, सरल करे कि आपके मधुर व्यवहार से समाज का प्रत्येक व्यक्ति तुम्हें आदर भाव से देखें''।

हमारे ज्ञानी,ऋषि, मुनियों ने प्रत्यक्ष प्राकृतिक परिवर्तनों की पृष्ठभूमि मे इन पचभूतों का वर्णन किया है। प्रभु के विराट, गौरव रूप को इन पांच शक्ति शाली पंच भूतों के क्रिया कलाप को देखकर इन मनीषियों ने यह अनुभव किया था कि मनुष्य को प्रदत्त परिस्थिति में प्रभु प्रीत्यर्थ कर्म करना चाहिए। अतः जीवन में सफलता के लिये सरलता ही मधुरता ही, शीतलता ही सुख, शान्ति को प्राप्त करने का प्रथम पाठ है, सूत्र है तब ही मनुष्य को प्रभु के विधान का मंगलस्वरूप दिखाई देता है। हीनता का भाव लुप्त होने से परमात्मा उसके लिये संबल हो जाता है।

मो. 09841094455, चेन्नई, तमिलनाडु

जीवन यात्रा

❒ नरेन्द्र आहुजा विवेक

हम किसी भी छोटी सी यात्रा पर निकलते हैं तो उसके लिए पहले पूरी योजना बनाते हैं कहाँ से कहाँ तक किस वाहन से यात्र करनी है, उसका पूर्व आरक्षण फिर समय से पूर्व पहुँच कर अपनी सुरक्षित सीट पर जाकर बैठना, रास्ते में आवश्यकता अनुसार सारा सामान भोजन वस्त्रादि की पूर्व व्यवस्था करके चलते हैं। फिर जहाँ जाना है वहाँ रहने भोजन आदि की पूर्व व्यवस्था आरक्षण करवा कर चलते हैं। यह सारी तैयारी हम यात्रा की सफलता और लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से करते हैं।

परन्तु कितनी आश्चर्यजनक बात है कि अपनी रोजमर्रा की इन छोटी–छोटी यात्राओं की इतनी तैयारी और मनुष्य जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण जीवन यात्रा के प्रति पूरी उदासीनता। छोटी सी यात्रा का लक्ष्य, मार्ग, मार्ग के वाहनों, भोजन, वस्त्र आदि की पूर्व व्यवस्था आरक्षण आदि ताकि कोई कष्ट ना हो लेकिन अपनी जीवन यात्रा के लक्ष्य का निर्धारण शायद ही हम में से किसी ने किया हो। अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत ईश्वर प्रदत्त अनमोल तन मनुष्य जीवन पाकर भी हम इसका उपयोग सही प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं। शरीर रूपी साधन का उपयोग हमें अपने लक्ष्य अर्थात जन्म जाल के बन्धनों से छूट कर मोक्ष की प्राप्ति के लिए करना चाहिए। परन्तु हम अबोध शायद अपने अस्तित्व से भी अनभिज्ञ इन साधनों अर्थात् मानव तन मे उपलब्ध मन, बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों को अपने आधीन रखने के स्थान पर शायद भौतिक शारीरिक सुख सुविधाओ की चकाचौंध में सम्मोहित इन साधनों के अधीन होकर अपना मानव जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं।

हमारी स्थिति शराब पीकर अपनी सुध–बुध खोकर वाहन चला रहे चालक की भाँति है जो गति के रोमांच के वशीभूत उस वाहन को अपने आधीन रखने के स्थान पर वाहन अधीन होकर दुर्घटना कर बैठता है और इस गति के रोमांच मे जीवन समाप्त कर लेता है। ठीक इसी प्रकार हम भी इस तथाकथित विकास के नाम पर भौतिक सुख सुविधाओं को इकट्ठा करने की अन्तहीन सी चाह में मन के वश में आकर अपने लक्ष्य से भटक कर बड़ी तीव्र गति से जीवन यात्रा कर रहे हैं। ईश्वर ने यह अनमोल मानव तन हमारे उपयोग के लिए दिया था परन्तु हम शायद इसके ठीक विपरीत इसका उपयोग अपने जीवन के लक्ष्य अर्थात मोक्ष की प्राप्ति न करके तथाकथित विकास की चकाचौंध मे सम्मोहित अपने विनाश की ओर बड़ी तीव्र गति से अग्रसर हैं।

हम कैसे अबोध हैं कि हम अपनी इतनी महत्वपूर्ण जीवन यात्रा में लक्ष्य के विपरीत दिशा में दौड़े चले जा रहे हैं। शायद हमें अपने लक्ष्य का कोई ज्ञान नहीं और यही अज्ञानता अबोधता हमारे दुःखों का कारण है। छोटी सी बस यात्रा करते समय तो पूरी तैयारी लक्ष्य का निर्धारण पूर्व आरक्षण रास्ते की वस्त्र भोजनादि की व्यवस्था परन्तु जीवन यात्रा में साधनो को आधीन रखने के स्थान पर साधनों के आधीन होकर झूठे विकास की चकाचौध से सम्मोहित विनाश की गहरी खाइयों की ओर बड़ी तीव्र गति से दौड़ रहे हैं इस अंधी दौड़ में कहीं पीछे ना छूट जायें इसलिए कहीं रुककर अपनी दिशा और दशा पर चिंतन करने की भी कोई सम्भावना प्रतीत नहीं होती।

अब अन्त में यह प्रश्न उठता है कि हमारी जीवन यात्रा का लक्ष्य क्या हो उस लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या हो बस मार्ग पर कैसे चलें और लक्ष्य को प्राप्त करें। मनुष्य को जीवन यात्रा का लक्ष्य बिल्कुल साफ स्पष्ट मोक्ष की प्राप्ति जिससे हम अर्थात जीवात्मा आनन्दस्वरूप परमात्मा के परम आनन्द में अपनी आत्मा को मग्न कर सकें और जन्म जाल अर्थात लाख चौरासी के चक्कर से मुक्ति पा सकें। अब प्रश्न है कि इस उद्देश्य की प्राप्ति का साधन क्या हो तो ईश्वर प्रदत्त यह अनमोल मानव शरीर इसकी मन बुद्धि ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ इस लक्ष्य प्राप्ति का साधन है और हमें इन साधनों को विशेष रूप से अत्यन्त चंचल सर्वाधिक गतिशील मन को अपनी नियंत्रण में रखकर ईश्वर प्राप्ति अर्थात उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना में लगाना है। अब जब लक्ष्य और साधन स्पष्ट हैं तो लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या हो तो यह मार्ग है अपने साधनों के अपने नियंत्रण मे रखकर आत्मा की उन्नति के लिए सद्कर्म परोपकार के यज्ञीय कार्य करते हुए अपने जीवन को यज्ञमय बना लेना। और निश्चित रूप से ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में अन्ततः हमें हमारे सद्कर्मो निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यो का फल हमारे लक्ष्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है। हम सभी अपनी जीवन यात्रा के लक्ष्य को पहचानें और उसकी प्राप्ति का प्रयास करें।

502, जी.एच.–27, सैक्टर–20पंचकूला (हर.)

यजवेदी पर ट्रस्ट मन्त्री द्वारा अरोड़ा दम्पत्ति (दिल्ली) सम्मानित किया गया। साथ में श्रीमती सुधा अवरोल, श्रीमती नीलम अरूण थापर को सम्मानित करते श्री लद्धा भाई पटेल, श्री अरूणा सतीजा एवम् उनके सुपुत्र राजेश सतीजा को सम्मानित करते श्री अरूण अबरोल व साथ में श्री रामनाथ सहगल

(पृष्ठ 2 का शेष)

कार्यक्रमों के उपरान्त यज्ञवेदी पर मुख्य यज्ञमान के रूप श्री सुनील मानकटाला, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती अंजू मुंजाल, श्रीमती उषा वर्मा अपने पुत्र ब्रिगेडियर रवि वर्मा के साथ एवं श्री रमेश ठक्कर, श्रीमती सरला ठक्कर, श्री अरूण थापर एवं श्रीमती नीलम थापर उपस्थित थे। इस अवसर पर यज्ञ के उपरान्त कुछ विशेष परिवारों को सम्मानित किया गया जिसमें नीलम-अरूण थापर (सुपुत्री श्री सत्यानन्द जी मुंजाल, प्रधान ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट) एवं सरला-रमेश ठक्कर को सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर श्रीमती अरूणा सतीजा पुत्र श्री राजेश सतीजा को प्रथम बार टंकारा जन्मभूमि पधारने पर विशेष रूप से सम्मानित किया गया। तदुपरान्त दिल्ली से आर्य समाज के युवा विद्वान डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार का यज्ञ पर प्रवचन इस दिन का मुख्य आकर्षण था। प्रवचन के उपरान्त श्री सतपाल पथिक जी के भजन के कार्यक्रम ने उपस्थित जनसमूह को भाव विभोर कर दिया।

अपराह्न 2 से 6 बजे तक युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण का कार्यक्रम था। पिछले 5 वर्षों से ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कालेजों के विद्यार्थियों के लिये टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबाल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन इत्यादि का कार्यक्रम दो सप्ताह पूर्व से चलता है जिसमें विजयी टीमों को इस सत्र में पारितोषिक दिये जाते हैं। इसी अवसर पर प्रश्नमंच के फाइनल राउण्ड का मंचन भी होता है। इसी अवसर पर गुरूकुलों के ब्रह्मचारियों की वेदमंत्र अन्त्याक्षरी के फाइनल के राउण्ड का भी कार्यक्रम रहता है। उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर संदेशात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं इस अवसर पर ही पारितोषिक के रूप में शील्ड, ट्राफी, स्मृतिचिन्ह तथा नगद राशि के साथ प्रमाणपत्र भी दिये जाते हैं। टंकारा के बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को आने-जाने का मार्ग व्यय भी दिया जाता है। इस सत्र की अध्यक्षता स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती (माउंट आबू) मुख्य अतिथि श्री महेश चोपड़ा एवं श्री आर के सेठी, कोषाध्यक्ष, डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति विशेष आमंत्रित के

युवा प्रतियोगिता के अन्तर्गत आयोजित संस्कृति श्लोक प्रतियोगिता के विजेताओं को पारितोषिक देते श्री एस.के. शर्मा एवम् डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री इसी के अन्तर्गत वॉलीबॉल के विजेताओं को सम्मानित करते श्री अरूण अवरोल एवं श्री राजीव चौधरी

इस अवसर पर मीशिगन अमेरिका से पधारे श्री विद्या भूषण जी वर्मा सपत्नीक का स्वागत करते श्री अरूण अवरोल, श्री वाचोनिधि आर्य एवं हंसमुख परमार। इस आयोजन पर जामनगर से उपस्थित डॉ. अविनाश भट स्वामी आर्येश्वरानन्द जी से आशीर्वाद प्राप्त करते श्री राजीव चौधरी जी का सम्मान करते पूर्व स्नातक श्री रमेश मेहता, श्री विद्या भूषण जी बच्चो को सम्बोधित करते हुए।

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारी अपना कायक्रम प्रस्तुत करते हुए।

रूप में डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, सचिव दिल्ली संस्कृत अकादमी, श्री मिठाईलाल सिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई, श्रीमती रेनू एवं राजीव चौधरी, दिल्ली, श्री वेद प्रकाश गर्ग, मुम्बई सपत्नीक, इन्हीं उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा युवा प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण किया गया । कार्यक्रम के उपरान्त श्री रमेश चन्द्र मेहता पूर्व स्नातक ने विजेताओं को आशीष वचन दिये । इस सत्र के संयोजक श्री हंसमुख भाई परमार, ट्रस्टी, टंकारा ट्रस्ट एवं मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, गुजरात थे।

सायं 5 से 7 बजे तक सन्ध्या कालीन यज्ञ में भारत के विभिन्न प्रान्तों से पधारे आर्य समाजों के प्रतिनिधि मुख्य यज्ञवेदी पर उपस्थित थे। निरन्तर सायंकालीन यज्ञ में टंकारा उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की भजन मंडली द्वारा भजनों का कार्यक्रम चलता रहा ।

रात्रि 7.30 से 10.30 बजे तक वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती (यमुना नगर) श्री रविन्द्र कुमार, सचिव, डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति , श्री अरूण अब्रोल, श्री लधाभाई पटेल, श्रीमती सुधा अब्रोल, श्रीमती भानू बेन, श्रीमती सुदर्शन चौधरी उपस्थित थे । इस रात्रि सत्र के कार्यक्रम में श्रीमती अरूणा सतीजा द्वारा वेदों में नारी का स्थान पर अपना ओजपूर्ण भाषण दिया । इसके उपरान्त मुख्य मंच से बोधोत्सव पर पधारे सभी सन्यासियों, वानप्रस्थियों का स्वागत शॉल एवं मानराशि देकर किया गया । तदुपरान्त उत्तर प्रदेश बिजनौर से पधारे संगीताचार्य श्री कुलदीप आर्य एवं पत्नी श्रीमती कविता आर्य द्वारा भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । इस अवसर पर मुख्य पंडाल में लगभग 7000 व्यक्तियों ने इस संगीतमय श्रद्धांजलि का आनन्द लिया ।

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संगीताचार्य एवम् भजनोदेशक श्री कुलदीप आर्य एवं पत्नी श्रीमती कविता आर्या द्वारा संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

10 मार्च, 2013 शिवरात्रि के दिन प्रभातफेरी, योग, प्राकृतिक एवं आयुर्वेद चिकित्सा के कार्यक्रम के उपरान्त यज्ञ पूर्णाहुति: प्रात: 8 से 10 बजे तक आयोजित हुई। किसी कारणवश आज के मुख्य यज्ञमान श्री

(शेष पृष्ठ 17 पर)

पंडित सत्यपाल पथिक जी को सम्मान पत्र देकर सम्मानित करते टंकारा पंचायत के प्रमुख, उत्सव पर उपस्थित सभी सन्यासियों को सम्मानित करते ट्रस्ट। के ट्रस्टी। डॉ. वेद साहनी (जयपुर) पुत्र सहित सम्मानित करते श्री अरूण अवरोल एवं आर्य समाज चैम्बुर मुम्बई नव निर्वाचित प्रधान श्री वेद प्रकाश गर्ग सपत्नीक को आशीर्वाद देते श्री रामनाथ सहगल।

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2013 की चित्रमय झांकी

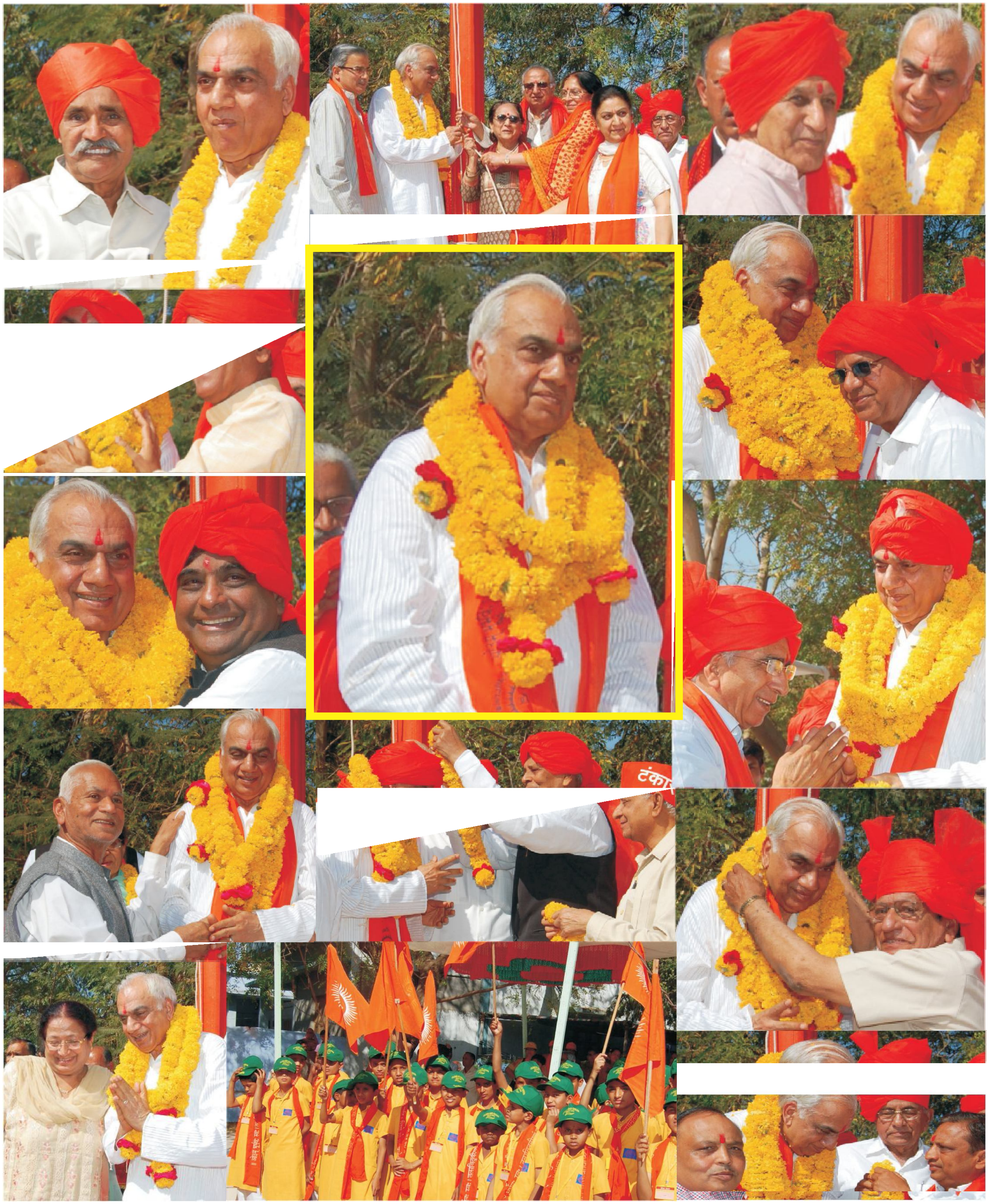

आर्य वीर दल टंकारा
आपका हार्दिक स्वागत करता है।
ऋषिबोधोत्सव की सभी को हार्दिक बधाई
जिला आर्य सभा लुधियाना
आपका हार्दिक स्वागत है
॥ओ३म्॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
महिला समाज स्वामी दयानन्द मार्ग
महिला आर्य समाज
रेलवे रोड,
अम्बाला शहर।
स्वागतम्
आर्य समाज सैक्टर 17-बी, चण्डीगढ़
ऋषिबोधोत्सव की सभी को
वैदिक बधाई
जिला आर्य सभा लुधियाना

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस
एवं शिवरात्रि के पावन पर्व पर
आपको हार्दिक शुभ कामनाएं
आर्य समाज
आदर्श नगर, जयपुर (राज.)
स्मारक ट्रस्ट
टंकारा

॥ ओ३म् ॥
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट
टंकारा

नवनिर्मित माता पुष्पावती मुंजाल सत्संग भवन में उपस्थित मुंजाल परिवार के सदस्य क्रमशः श्रीमती नीलम थापर एवं अरूण थापर (माता जी की बेटी एवं दामाद) श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल एवं श्रीमती अन्जु मुंजाल (दोनों सुपुत्र एवं पुत्र वधू) श्रीमती सरला ठक्कर (माता जी की छोटी बहन)

(पृष्ठ 12 का शेष)

पूनम सूरी एवं श्रीमती मणिसूरी डी. ए. वी. के किसी अति आवश्यक कार्य हेतु उपस्थित नही हो सके। इस कारण मुख्य यज्ञवेदी पर श्री योगेश मुंजाल, श्रीमती एवं श्री सुधीर मुंजाल, श्री सुनील मानकटाला, श्रीमती एवं श्री अरूण अब्रोल, श्री महेश चोपड़ा, श्री आर के सेठी, कोषाध्यक्ष, डी. ए. वी., श्री रविन्द्र कुमार, सचिव, डी. ए. वी. एवं श्री एस के शर्मा जी उपस्थित हुये । इनके साथ श्री कुलभूषण कौशल, निदेशक डी. ए. वी. पश्चिमी भारत साथ में उपस्थित थे । यज्ञ का अग्न्याधान श्रीमती शिवराजवती आर्य एवं श्री सुनील मानकटाला द्वारा किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त सभी उपस्थित जनसमूह टंकारा परिसर स्थित ध्वजस्थल पर एकत्रित हुये और श्री योगेश मुंजाल जी द्वारा ध्वजारोहण का कार्य सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर पंडित सत्यपाल पथिक जी ने ध्वज गीत गाते हुये ध्वजमहिमा का गान किया । इस अवसर पर स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, श्री एस के शर्मा, श्री रविन्द्र कुमार, श्री महेश चोपड़ा, श्री आर के सेठी, आचार्य रामदेव, श्री गुरूदत्त तिवारी, श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल, डॉ. वी. एच. पटेल, हंसमुख परमार, श्री सुनील मानकटाला, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती स्नेहलता हाण्डा, श्री मिठाई लाल सिंह, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, पंडित रमेश चन्द मेहता, पंडित सत्यपाल पथिक, श्री वाचोनिधि आर्य, श्रीमती भानू बेन, श्रीमती राज लूथरा एवं श्री रामनाथ सहगल महानुभावों ने फूल माला डालकर उनका अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ दी।

इसके उपरान्त 10.30 बजे शोभायात्रा को श्री योगेश मुंजाल एवं स्थानीय विधायक श्री मोहन भाई कुण्डारिया ने ओ३म् ध्वज

(शेष पृष्ठ 23 पर)

श्री सत्यदेव भारद्वाज स्मृति पुरस्कार प्राप्त करते उत्तीर्ण हुआ ब्रह्मचारी एवं ओंकार नाथ आर्य सिलाई केन्द्र की उत्तीर्ण बलिकाएं

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

प्रधान श्री पूनम सूरी जी का ऋषि बोधोत्सव पर पढ़ा गया संदेश

आओ मिलकर ऋषि के सपनों को साकार करें

ऋषि दयानन्द की इस पवित्र, पावन, जन्मस्थली पर देश और विदेशों से इस बोधोत्सव पर आए आप सभी आर्यजनों का मैं अपने दिल की गहराइयों से स्वागत और अभिनन्दन करता हूँ। आप लोग दूर-दराज स्थानों से समय, परिवहन की मुश्किलों का सामना करके जागरण का सही मार्ग दिखाने वाले पूरे संसार के हित चिन्तक व मार्गदर्शक को अपनी श्रद्धांजलि देने यहाँ आये हैं इसके लिए मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। आदरणीय मुंजाल जी, श्री रामनाथ जी सहगल, श्री अजय सहगल, इस ट्रस्ट के अन्य पदाधिकारियों और सदस्यों का मैं एहसानमंद हूँ आइए सब मिलकर जोरदार तालियों से इनका अभिनंदन करें। मेरा यह मानना है और मुझे इस बात का पूरा विश्वास है हम सबने इस उत्सव में आकर त्यागमूर्ति संन्यासियों से आर्शीवाद प्राप्त किया है, यहाँ आए आर्य विद्वानों से मार्ग दर्शक अनमोल वचन सुने हैं, देश के चोटी के भजनोपदेशकों ने भजनों की जो आध्यात्मिक अतिधारा प्रवाहित की उसमें तत्कालीन होने का मौका हमें मिला है, इस महान विद्यालय के निष्ठावान, समर्पित आचार्यो के ब्रह्मत्व मैं जिज्ञासु ब्रह्मचारियों के सरल और सरस वेद-पाठ के रूप में ईश्वर की वेदवाणी के मन्त्रों से हमारे श्रवण पवित्र और सार्थक हुए है और इन सबसे ऊपर इस परिसर के आध्यात्मिकता के माहौल में कुछ समय बिताने का अमूल्य मिला है, इन सब बातों के फलस्वरूप हम यहाँ से एक नया जज्बा, एक नयी स्फूर्ति, एक नया आत्मबल और जागते रहने का एक संकल्प लेकर अपने घरों को जायेंगे और उस परमपिता के सच्चे दर्शन, विश्वनियन्ता उस प्रभु के रहस्यों को जानने और उसकी अमृत संतान की सेवा में अपना तन, मन और धन लगाने का विनम्र प्रयत्न करते रहेंगे। लेकिन यह सब आसान भी नहीं। आइये उस परमपिता से प्रार्थना करें कि वह हमारी मुश्किलों में सहायता करें-

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।

यह मन्त्र ऋषि दयानन्द का प्रियतम मन्त्र है। अपने वेदभाष्य के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में इसी मन्त्र से ईश्वर की सहायता की प्रार्थना की है। प्रत्येक मतमतान्तर को मानने वाला इस मन्त्र से बिना संकोच प्रार्थना कर सकता है। इस प्रकार की प्रार्थना सब प्रकार की साम्प्रदायिकताओं से मुक्त है सभी 'दुरित' से बचना चाहते हैं और 'भद्र' को ग्रहण करना चाहते हैं।

इस प्रार्थना को सफल करने के लिए हमें अपने जीवन में पांच 'प्र' धारण करने पड़ेगे। ये पांच 'प्र' हैं- प्रतिज्ञा, पुरुषार्थ, प्रतीक्षा, प्रार्थना, प्रयास। यदि हम यह चाहते हैं कि यह उत्सव, पूरी तरह से सफल हो, तो यह प्रतिज्ञा करें-मैं आज से निरन्तर जागते रहना ही प्रतिज्ञा करता हूँ। **अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि, तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।** केवल प्रतिज्ञा करने से भी हमारा मकसद हल नहीं होगा। अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हमें करना होगा पुरुषार्थ। पुरुषार्थ के बिना कुछ नहीं

श्री पूनम सूरी जी को ऋषि जन्मभूमि का स्मृति चिन्ह एवम् शोल भेंट करते ट्रस्ट मन्त्री श्री रामनाथ सहगल साथ में श्री राधेश्याम शर्मा महामन्त्री डी.ए.वी. श्री अधलखा जी मन्त्री आर्य समाज अनारकली, श्रीमती ककडिया, श्री एस.के. शर्मा एवं श्री शूर जी निर्देशकगण डी.ए.वी.

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पूनम सूरी जी के सौजन्य से सभा द्वारा 5 लाख रूपये की सहयोग राशि ऋषि जन्मभूमि में चल रहे कार्यो हेतु प्रदान की गई।

मिलता। इस पुरुषार्थ के लिए हमें चार सकारों की शरण लेनी होगी। संस्कार कहते हैं 'स' को। चार स हैं-संध्या, स्वाध्याय, सत्संग और सेवा। प्रतिज्ञा करें की प्रतिदिन प्रातः उठकर ईश्वर का जप ध्यान चिन्तन करेंगे। वेदादि सत् शास्त्रों का स्वाध्याय करेंगे और साथ ही करेंगे। अपने 'स्व' का अध्ययन। Self Introspection, Self Evaluation, Self Analysis। आर्य समाज के सत्संगों में जायेंगे। यह सब करने के बाद दीन दुःखियों की सेवा करेंगे सहायता करेंगे। प्रतीक्षा कर अन्तः करण को शुद्ध करने का इससे अच्छा तरीका ही नहीं है। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी कहा करते थे चार 'स' सुखी संसार के साधन हैं। चार 'स' अपने अन्दर भर लें, जीवन सुख से भर जायेगा। किसी शायर ने कहा–

इबादत है दुःखियों की इमदाद करना, जो नाशाद हैं उन्हें दिलशान करना,
असली पूजा और हवन यही है, जो बर्बाद है उन्हें आबाद करना।

अब बारी आई प्रार्थना की–बड़े मन से प्रार्थना की– हे भगवन मैंने प्रतीज्ञा कर ली, अब तो बस मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लो, प्रभु! बुराईयों खुद–बु–खुद दूर हो जायें और अच्छाइयाँ भी स्वयं चलकर मेरे पास आ जायें। प्रार्थना की लेकिन जवाब नहीं मिला। भला क्यों? अच्छाइयों का घर तो है मन और मन में घर बना रखा है मैल ने। तो क्या करें। बार–बार धुलाई करो कपड़ा साफ हो जायेगा, चमक जायेगा। तो करना क्या होगा। प्रयास।

मुझे पूरा यकीन है आपने इस बोधोत्सव पर आकर जो प्रतिज्ञा की है, उसकी प्राप्ति के पुरुषार्थ करेंगे, प्रार्थना करेंगे, प्रार्थना स्वीकार होने की प्रतीक्षा करेंगे और फिर निरन्तर प्रयास करते रहेंगे।

मित्रों कुछ और संकल्पों की ओर भी मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। आज आर्यसमाज की दशा को सुधारने के लिए भी संकल्प लेने होंगे। दशा क्या है आप से छुपा नहीं। मुझे एक ऐसे परिवार में जन्म मिला है जिसको स्वामी दयानन्द की विरासत प्राप्त हुई। मेरे परदादा मुंशी गणेश दास जी, सियालकोट के गांव जलालपुर जट्टाँ में रहते थे। हिन्दु समाज धर्म की दशा से इतने परेशान हुए कि फैसला कर लिया–कल सुबह क्रिश्चियन बन जाऊंगा। उसी शाम स्वामी दयानन्द के दर्शन हुए। अपनी शंकायें स्वामी जी के सामने रखीं। युक्ति और विवेक की प्रतिमूर्ति स्वामी दयानन्द के समाधान दिये और दूसरी सुबह गांव में आर्य समाज की स्थापना हुई। इन्हीं मुंशी गणेशदास के सुपुत्र खुशहाल चन्द्र, जो आगे चल कर महात्मा आनन्द स्वामी बने, मेरे दादा हुए जिनकी गोदी में खेलते हुए आर्य समाज की घुट्टी मिली। महात्मा आनन्द स्वामी के पुत्र रणवीर देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले सेनानी बने जिन्हें जेल भी जाना पड़ा। मेरे तो खून के एक–एक कण में बसा हुआ है आर्य समाज। आज चारों ओर देखता हूँ तो मन रो उठता है। स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष जैसे रोगो के कीटाणुओं ने, जैसे एक साथ धावा बोल दिया है। पिछले दिनों अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन हुए। सबका एक ही उद्देश्य एक ही संदेश। मंच दो। मुझे भी आमंत्रण मिला। मैंने जाना उचित नहीं समझा। अपनी आत्मा की आज्ञा का पालने करते हुए दोनों आयोजनों को अपना एक ही संदेश भेजा जिसमें अपनी आन्तरिक पीड़ा को बताते हुए कहा कि जब दोनों पक्ष मिलकर एक स्वर से एक मंच से निःस्वार्थ, प्रेम और विचारों की एकता का प्रदर्शन करेंगे तो मैं नंगे पाँव चलकर जाऊंगा ताकि ऋषि ऋण से अऋण होने के यज्ञ में 'इदं न मम' कह कर अपनी विनम्र आहुति दे सकूं। कुछ आर्य पत्रिकाओं में यह सन्देश छूपा भी और मैं धन्य हो गया जब आर्य समाज के सच्चे सिपाहियों के बधाइ सन्देशों का सिलसिला शुरू हुआ।

आज मैं ऋषि की इस पावन जन्म स्थली से एक विनम्र आह्वान देना चाहता हूँ– आर्यो। एक हो जाओ! उतार फैंको वैमनस्य, द्वेष के विषैले नाग को और प्रेम रस में तृप्त होकर सहृदयता, सांमनस्य और अविद्वेष का उद्यत आधार लेकर एक दूसरे से ऐसे मिलो, एक दूसरे से इस तरह प्रेम करो जैसे गाय अपने ताजें ब्याये (जन्में) बछड़े से प्यार करती है।

संगच्छध्वं संवदध्वं स वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो।।

ईश्वर न करे अगर ऐसा न हो सका तो कवि के शब्द सच हो जायेंगे।–

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ आर्य समाज वालो।
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।।।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी.ए.वी. प्रबंधन समिति के प्रधान की कुर्सी तो आपने दी। गद्देदार भी है पर चुभती भी रहती है। डी.ए.वी. जिसका मतलब है लगभग 2 करोड़ देशवासियों का एक परिवेश आज जिस उद्देश्य लक्ष्य को आगे रखकर चल रहा है वह ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है–

तन्तुं तन्वन् राजसोभानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृताम्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।

हे यज्ञ करने वाले कर्मशील मनुष्य तू आकाश के सूर्य का अनुसरण कर बुद्धि द्वारा बनाये गये प्रकाशवाले मार्गो को सुरक्षित रख। कवियों, विद्वानों अथवा सामगान करने वाले लोगों के कर्मो को यथोचित प्रकार से बुन आगे बढ़। मनुष्य था मननशील बन। दिव्यगुण कर्म स्वभाव वाली जनता को पैदा कर।

सूर्य जब आकाश में निकलता है तो धीरे–धीरे ऊपर की ओर चढ़ता जाता है। हम सबको भी ऊंचा उठने की चेष्टा करनी है। हममें यह व्यग्रता हो उत्कण्ठा हो कि हम ऊंचे उठेंगे कोई हमें गिरा नहीं सकता। सूर्य के आकाश में ऊपर उठने के दो प्रायोजन हैं– एक प्रकाश देना और अपनी गरमी के हर पदार्थ में संचार करके उसके जीवन को समृद्ध करना। सूर्य मानों ऊपर पहुँचकर यह देखता है कि कहीं अंधेरा तो नहीं रह गया। ऊंचा उठने की इच्छा वाले मनुष्य को स्वयं से प्रश्न करना है–मैंने कितना अंधकार दूर किया है। मैंने दूसरों में कितनी शक्ति का संचार किया है।

दूसरी बात जो इस मंत्र में कहीं गई सूर्य के समान बुद्धिमान लोग भी अपनी बुद्धि के प्रकाश से परिपाटियों को ट्रेडिशन को उज्जवल ऋषि–महात्मा बनाते हैं। **'महा जनों येन गतः स पन्था'** मार्ग वहीं है जिस पर बड़े आदमी चलाते हैं। सज्जनों का यह आचार–सदाचार हमारा मार्ग बना रहे। बुद्धियों को प्रेरित करने की प्रार्थना–गायत्री महामन्त्र में की गई क्योंकि बुद्धि ही अन्धेरे मार्गो का उजाला कर सकती है। तीसरी बात है–मनुष्य तो हैं पर मननशील बहुत कम हैं। संसार के सारे धार्मिक सम्प्रदाय अपने को अच्छा कहते हैं और दूसरों का बुरा परन्तु मनुष्य बनने पर कोई बल नहीं देता। कोई कवि एक ही बात कहता है–मनुष्य बन। बन्दा बण।

आदमी आदमी जो बन जाय, कष्ट सारे जहां का मिट जाय।

ईश्वर हम सबको अच्छा मनुष्य बनने में सहायता करें और इसके लिए हम सब प्रकाश के मार्गो पर चलते हुए जीवन का रोग रहित ताना–बाना बुनते चलें। तभी दिन बदलेंगे, हमारा निजी जीवन आर्यत्व से भरेगा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से ऋषि बोधोत्सव के इस महान यज्ञ में 5,00,000/– रूपये की एक विनम्र राशि दी जा रही है। स्वीकार करें।

आइए कन्धे–से–कन्धे मिलाकर ऋषि के सपनों को पूरा करें।
आप सबके हित मेरी शुभकामना।
खुश रहो, आबाद रहो, आजाद रहा। जो बोले सो अभय।

ઋષિ દયાનન્દ ન હોત તો

મૂળ હિન્દીમાં લેખક:- શ્રી હરિશ્ચન્દ્ર વર્મા (ટંકારા સમાચારના ઋષિ બોધાંકમાંથી સાભાર)
અનુવાદક:- પં. રમેશ ચન્દ્ર મહેતા 'ટંકારામિત્ર', ઈમેલ:- pt.rammehta@gmail.com

ધર્મ અને વેદોના સત્યાર્થને કોઈ સમજી ન શકત. બધાં જ લોકો સાયણ વિગેરેના વેદભાષ્યને જ પ્રમાણિત માનત. સાયણનો સમય મોગલ કાળ હતો. એના ભાષ્યમાં પણ પૌરાણિક છાયા હતી. તો મહિધર તાન્ત્રિક હતા. બંને જણે વેદભાષ્ય કરવા માટે નિરુકિતનો સહારો નહોતો લીધો. બંને જણે પ્રચલિત સંસ્કૃતના નિયમોના આધારે જ વેદાર્થ કર્યા હતા. એનું અનુસરણ યૂરોપીય વિદ્વાનોએ પણ કર્યું.

વેદોના શબ્દો યૌગિક છે અને એના વાસ્તવિક અર્થને ત્યારે જ સમજી શકાય, જ્યારે એના નિયમોના આધારે એનું પાલન કરવામાં આવે. આ બંને જણે પાણિની વ્યાકરણ, નિરુકત તથા નિઘંટુની ઉપેક્ષા કરી. જે મન્ત્રોના અર્થ ઉપનિષદ તથા બ્રાહ્મણ ગ્રન્થકારોએ કર્યા હતા, એ અર્થોની પણ એમણે અવજ્ઞા કરીને પૌરાણિક અને તાન્ત્રિકો જેવા અર્થ કર્યા. વિદ્યાના આ વેદ ગ્રન્થને સાધારણ પુસ્તકની કક્ષા કરતા પણ નીચે લાવીને મૂકી દીધો. મન્ત્રનો પૂરો બોધ ન હોવાને કારણે લોકો વેદ વિરુદ્ધ અન્ધ પરમ્પરાઓને જ સાચી માનવા લાગ્યા. ૧૮મી શતાબ્દી પહેલાથી જ વેદજ્ઞાન શૂન્ય લોકોએ એવી મનઘડંત માન્યતાઓને શિરાધાર્ય કરી. અનેક પ્રકારના તથાકથિત ભગવાન, ધર્મ, પન્થ, સમ્પ્રદાય બિલાડીની છત્રીઓની જેમ ફેલાઈ ગયા. જેટલા ભગવાન પેદા થતા ગયા, એટલો જ અનાચાર પણ ફેલાતા ગયા.

એ સમયે આર્યાવર્તના કોઈ પંડિતમાં એટલું સાહસ નહોતું કે સાયણ વિગેરેના અર્થને એક બાજુએ મૂકીને વેદોના સાચા અર્થ કરે. બ્રાહ્મણો પણ વિચાર શકિત ખોઈ બેઠા હતા. બધાં જ લકીરના ફકીર બની ગયા હતા. કોઈનામાં કોઈ જ યોગ્યતા નહોતી. એવા સમયે જ્યારે ઋષિ દયાનન્દ ગુરુ વિરજાનન્દની કુટીરમાં પહોંચ્યા.

ત્યાં વેદોના વ્યાકરણ, અષ્ટાધ્યાયી, નિઘંટુ આદિનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યા પછી જ્યારે ગુરુ પાસેથી વિદાય લેવાનો સમય આવ્યો ત્યારે ગુરુદક્ષિણામાં ગુરુએ એમની પાસે માંગ્યું કે ભારત અને સમાજ વેદ વિદ્યાને ભૂલી ગયો છે, મન્ત્રોના અનર્થ કરવામાં આવ્યા છે એટલે લોકો કુરીતિઓ, કુસંસ્કારોમાં ફસાયા છે. જાઓ, એમને સત્યમાર્ગનું દર્શન કરાવો, આજ મારી સહુથી મોટી ગુરુદક્ષિણા હશે.

વેદાર્થને સમજવા માટે નિરુકત, નિઘંટુ, ઉપનિષદ તથા બ્રાહ્મણ ગ્રન્થ છે, જેની સહાયતા લીધા વિના સાયણ અને મહીધરે વેદોના સાચા અર્થ કરવામાં ગંભીર ભૂલ કરી છે. ત્યારે ઋષિ દયાનન્દ જ એવા મહાપુરુષ હતા જેમણે નિર્ભય થઈને ઉચ્ચ સ્વરે ઘોષણા કરી કે વેદોમન્ત્રોના અનર્થ કરવામાં છે. વેદ તો સત્ય વિદ્યાનું પુસ્તક છે. એને સિદ્ધ કરવા માટે ઋગ્વેદાદિ ભાષ્ય ભૂમિકા અને સત્યાર્થપ્રકાશ જેવા મહાગ્રન્થોનું પ્રણયન કરીને સમાજની આંખો ખોલી નાખી. લોકો સામે સત્યાર્થ મૂકયા. બ્રહ્મા, વિષ્ણુ મહેશ આદિનો સાચો અર્થ સમજાવીને લોકોમાં સત્ય-અસત્ય કરવાનો વિવેક જગાવ્યો. ક્રમશ: બધાને સમજાઈ ગયું કે વાસ્તવમાં વેદ જ સર્વ સત્ય વિદ્યાઓનું પુસ્તક છે. અમેરિકાના વિદ્વાન્ થોરોએ પણ કહ્યું કે of all the so-called revelations, the Vedas are the only ones whose Principles are based on reason and Science. એટલે કે ઈશ્વરીય જ્ઞાન કહેવાતા બધા પુસ્તકોમાં માત્ર વેદ જ એવું પુસ્તક છે, જેનો આધાર તર્કના સિદ્ધાન્ત પર છે.

સંસારના બધાં મત-સમ્પ્રદાયોમાં માત્ર વૈદિક ધર્મ જ એવો છે, જેમાં સૃષ્ટિ ક્રમના નિયમોને અનુકૂળ સિદ્ધાન્તો જોવા મળે છે. એટલે વૈદિક ધમર્માં કયાંય વિજ્ઞાનનો વિરોધ જોવા નથી મળતો.

જે દેશમાં એકેય ઝાડ નથી હોતું એ દેશમાં એરંડાને જ લોકો ઝાડ માની બેસે છે. એવી જ રીતે જર્મનીનાં મૈકસમૂલરને લોકો મોટા વિદ્વાન માનતા હતા. પરન્તુ જ્યારે ઋષિ દયાનન્દ વેદોના સાચા અર્થને લઈને લોકોની સામે આવ્યા ત્યારે લોકોને સમજાયું કે મૈકસમૂલર કંઈ સંસ્કૃતના મોટા વિદ્વાન નથી. એમણે વેદોના સાચા અર્થ પણ નથી કર્યા.

પ્રો. ભવાનીલાલ ભારતીય 'આર્ય સંસાર'ના સ્વર્ણ જયન્તિ વિશેષાંકમાં લખે છે કે - "જેવી રીતે પ્રો. એ. એ. મૈકડૉનલે ઋગ્વેદમાં આવેલ 'પૂષા' દેવતાના સૂકતના તત્વાર્થને ન સમજતા એને ગોવાળિયાના ગીત કહ્યા, એવી જ રીતે મૈકસમૂલર પણ વેદોને ઘેંટા-બકરા ચરાવવાળાના ગીત કહે તો એમને કોણ રોકી શકે."

વેદમાં એકેશ્વરવાદ છે કે બહુદેવતાવાદ, આ વિવાદમાં પોતાને અલગ-થલગ રાખીને મૈકસમૂલરે વેદના સન્દર્ભમાં એક નવા શબ્દને જન્મ આપ્યો, એ છે 'હોનોથીજ્મ'. આ શબ્દ દ્વારા એ કહેવા માંગતા હતા કે વેદોમાં ન તો શુદ્ધ એકેશ્વરવાદ છે કે ન તો સ્પષ્ટ બહુદેવતાવાદ. અપિતુ જે વેદમન્ત્ર જે દેવતાની સ્તુતિ કરે છે, એ, એ સ્થળે એને જ સર્વોચ્ચ જાહેર કરે છે.

અમારું કહેવું છે કે પ્રો. મૈકસમૂલરને આ નવા શબ્દને જન્મ આપવાની જરૂર જ શું હતી. ચોક્કસ જ જે વેદમન્ત્રોમાં અગ્નિ, ઇન્દ્ર, મિત્ર, વરુણ, આદિ દેવતાઓનું સ્વલન છે, એ એક પરમેશ્વરીય સત્તાના જ વિભિન્ન નામ છે, જે એના તત્ – તત્ વિભૂતિ, શકિત, ગુણો તથા મહત્ત્વના પરિચાયક છે. એટલે આ બધા મન્ત્ર પ્રકારાન્તરે એક પરમાત્માદેવની જ સ્તુતિ કરે છે. શ્રી અરવિન્દે પોતાના પ્રસિદ્ધ લેખ 'દયાનન્દ અને વેદમાં મૈકસમૂલરના આ નવા આવિષ્કૃત હીનોથીજ્મનો ઉપહાસ કરીને વૈદિક એકેશ્વરવાદને વેદનો નિર્વિવાદ સિદ્ધાન્ત માને છે. એક અર્થ 'અગ્નિ' પણ છે, જુઓ 'અશ્વંન ત્વાવારવન્તમ્ વિદંધ્યા અગ્નિંનમોભિ:॥' (ઋગ્વેદ). અર્થાત્ અશ્વંનો અર્થ અગ્નિ છે. વેદ મન્ત્રોના અર્થ જ્યાં જેવા હોવા જોઈએ, ત્યાં એનાથી વિપરીત અર્થ કર્યા છે. એટલે એ યૂરોપીય દેશોના તો વિદ્વાન હોઈ શકે પણ આર્યાવર્ત્તીય અને વેદોના નહીં.

વૈદિક અજ્ નો અર્થ અન્નાદિ પદાર્થ છે. 'મેઘ'નો અર્થ 'યજ્ઞ' છે, આનાથી સિદ્ધ થાય છે કે યજ્ઞાગ્નિમાં અન્નાદિ સામગ્રિયોથી હોમ કરવો જોઈએ. સ.પ્ર. અગિયારમાં સમુ.માં "બ્રાહ્મણ ગ્રન્થોમાં અશ્વમેધ, ગોમેધ, નરમેધ, આદિ જે મન્ત્ર છે એનો સત્યાર્થ આ રીતે છે - 'રાષ્ટ્રં' કે અશ્વમેધ:॥ શત. ૩.૧.૬.૩૧॥ અન્નંહિ ગૌ:॥ શત – ૪-૩-૧-૨૫॥ અગ્નિર્લાઅશ્વ:॥ શતપથ બ્રાહ્મણે॥ અર્થાત્ ઘોડા, ગાય આદિ પશુ તથા મનુષ્યોને મારીને હોમ કરવા જોઈએ એવું નથી લખ્યું, માત્ર વામમાર્ગિઓના ગ્રન્થોમાં આવા અનર્થ લખ્યા છે. આ ચલણ પણ વામમાર્ગિઓએ જ ચલાવ્યું છે. અને જ્યાં જ્યાં સાચા અર્થ લખ્યા છે, ત્યાં ત્યાં પણ વામમાર્ગિઓએ પ્રક્ષેપ કર્યા છે. જુઓ રાજા ન્યાયધર્મથી પ્રજાનું પાલન કરે, વિદ્યાદિના આપવા વાળા યજમાન અને અગ્નિમાં ઘી આદિનો હોમ કરવો, અશ્વમેધ. અન્ન, ઈન્દ્રિઓ, કિરણ, પૃથ્વી આદિને પવિત્ર કરવા – ગોમેધ. જ્યારે મનુષ્ય મરી જાય ત્યારે એના શરીરના વિધિ પૂર્વક અગ્નિ સંસ્કાર કરવા – નરમેધ કહેવાય છે."

ઋષિ દયાનન્દનું અવતરણ ન થયું હોત તો શું સ્થિતિ હોત? વિદ્વાનો અને જિજ્ઞાસુઓ વેદમન્ત્રોના સાચા અર્થ અને

સત્યાસત્યનો વિવેક કઈ રીતે કરી શકત? જો ઋષિ દયાનન્દ ન હોત તો આર્યસમાજનો મૂળાધાર વેદ પણ ન હોત. સૃષ્ટિ વિસ્તારનું મૂળ તત્ત્વ – ઈશ્વર, જીવ અને પ્રકૃતિનું જ્ઞાન કોણ કરાવત? વૈદિકી સંસ્કારવિધિનો બોધ પણ કોણ કરાવત? સામાજિક સુધાર અન્તર્ગત બાલવિવાહનો નિષેધ, વિધવા વિવાહનું પ્રચલન, શુદ્ધિ સંસ્કારનું સમર્થન, જન્મના જ્ઞાતિ પ્રથાનો વિરોધ અને આભડછેટનું ઉન્મૂલન કોણ કરત? જન્મના વર્ણાશ્રમ પ્રથાને સ્થાને ગુણ-કર્મ-સ્વભાવ કોણ કરત? વેદવિરુદ્ધ પ્રતિમાપૂજન અને વેદાનુકૂળ વૈદિક યજ્ઞોનું અષ્ટાંગ યોગનું સાચું જ્ઞાન કોઈને પણ ન થાત. નારી શિક્ષા માટે કન્યા વિદ્યાલયાની સ્થાપના, અને વૈદિક ગ્રન્થોના સ્વાધ્યાયનો અધિકાર એ સમયના બ્રાહ્મણોએ કોઈનેય ન આપ્યો ન હોત. જો ઋષિ દયાનન્દ ન થયા હોત તો સત્યધર્મને જાણવા-સમજવા અને પોપલીલાને સમાપ્ત કરવા માટે 'સત્યાર્થપ્રકાશ' જેવા તર્ક અને વિજ્ઞાનની કસોટીએ ખરા ઉતરનારા મહાગ્રન્થની રચના સંસારના બીજા કોઈજ મહાપુરુષે ન કરી હોત.

ભદ્રં કર્ણેભિ: શ્રૃણુયામ દેવા ભદ્રં પશ્યેમાક્ષભિર્યજત્રા:।
સ્થિરૈરંગૈસ્તુષ્ટુવાં સસ્તનુભિર્વ્યશેમહિ દેવ હિતં યદાયુ:।।

યજુર્વેદના આ મન્ત્રનું ભાષ્ય ઋષિ દયાનન્દે કેટલું અદ્દભૂત કર્યું છે - "જે મનુષ્ય વિદ્વાનોની સાથે રહીને કાનોએથી માત્ર સત્ય વચનોને જ સાંભળે, જે કંઈ પણ સત્ય પદાર્થ છે, સંસારમાં એ બધાંને, પોતાની આંખોએથી જુએ, અસત્યને ન તો ક્યારેય જુએ કે ન સાંભળે,. સત્યને જોઈ, સાંભળી અને સમજીને એ ભદ્રતા પૂર્ણ કલ્યાણમય જીવન વ્યતીત કરી શકે છે. સ્વસ્થ અને સુદૃઢ અંગોવાળા શરીરથી પૂર્ણ આયુને સુખ પૂર્વક પ્રાપ્ત કરે. જગદીશ્વરની સાચી સ્તુતિ કરે, ખોટી સ્તુતિની પ્રશંસા ન કરે."

આવા ઋષિ દયાનન્દ સત્યનિષ્ઠ મહાત્મા હતા. એમના સિદ્ધાન્તોમાં સૃષ્ટિક્રમના નિયમોથી વિરુદ્ધ કોઈ જ વાતને સ્થાન નહોતું. તેઓ સત્યવિદ્યાના સમર્થક હતા. ધાર્મિક ગ્રન્થોમાં જે પ્રક્ષિપ્ત વાતો હતી એ એમને માન્ય નહોતી. વેદને સ્વત: પ્રમાણ માનતા હતા. એમના મહાન ગ્રન્થ 'સત્યાર્થપ્રકાશ'ની રચનામાં એવો તો જાદુ છે, જે એને નિશ્પક્ષ રૂપે મનોયોગથી ધ્યાન પૂર્વક વાંચે છે એને ત્રૈતવાદ (ઈશ્વર, જીવ અને પ્રકૃતિ)નું જ્ઞાન તો થઈ જ જાય છે, સાથે સત્ય ધર્મનું જ્ઞાન પણ થઈ જાય છે. એના મનમાંથી અવિદ્યા અને કુસંસ્કારરૂપી ભૂતનો ભય નાશ પામે છે. 'સત્યાર્થપ્રકાશ' એક એવું મશીન છે જે ચોખામાં ભળી ગયેલા કાંકરાઓને જુદા પાડી દે છે. એ લાખો લાખો લોકોને આર્યત્ત્વના માર્ગે આગળ લઈ જાય છે.

ઋષિ દયાનન્દના સિદ્ધાન્ત માત્ર વૈદિકધર્મને જ સત્ય સિદ્ધ કરવા માટેના નથી, અપિતુ સમાજ અને દેશની સ્વતંત્રતા એકતાના વિષયમાં પણ છે.

ઋષિના તપસ્વી જીવનની એક ઘટના શિક્ષા-મૂલક છે –

થપ્પડ મારીને વેદાન્ત-મતનું ખંડન – (ઋષિ જીવન ચરિત્રમાં)

ખન્દોઈ ગામમાં છતર સિંહ નામના એક જાટ પુરુષ વેદાન્ત મતના અનુયાયી હતા. એક દિવસ એ મહારાજ સાથે વેદાન્ત મત પર ચર્ચા કરતા હતા.મહારાજની અકાટ્ય યુક્તિઓ સામે નિરુત્તર થઈને એમણે કહ્યું - "મહારાજ! તમે ભલે ગમે તે કહો, પરન્તુ સાચી વાત તો એજ છે કે જગત મિથ્યા છે." એ વખતે તો મહારાજે એનો કંઈ જવાબ ન આપ્યો, પણ થોડીવાર પછી એના મ્હોં પર એક થપ્પડ મારી. આથી એ જાટે ક્રોધિત થઈને કહ્યું કે "તમારા જેવા મહાપુરુષે માત્ર મતભેદને કારણે થપ્પડ નહોતી મારવી જોઈતી." જવાબમાં મહારાજે કહ્યું "ચૌધરીજી! જ્યારે જગત જ મિથ્યા છે અને બ્રહ્મ સિવાય કંઈ છે જ નહીં તો એ કોણ છે કે જેણે તમને થપ્પડ મારી?" જે છતરસિંહ યુક્તિથી નહોતા માન્યા, એ થપ્પડ ખાઈને માની ગયા. એના જ્ઞાનચક્ષુ ખુલી ગયા. એમણે સ્વામીજીના પગમાં પડીને કહ્યું મહારાજ! તમે તો મારી આંખો ખોલી નાખી.

સ્વામીજી સદૈવ કર્મ-ધર્મને જ મહત્ત્વ આપતા હતા. એમનું લક્ષ્ય તો મનુષ્યમાત્રને એ જ્ઞાન કરાવવાનું હતું કે એ શરીરના નહીં, આત્માનો સ્વામી છે, આત્મતત્ત્વને ઓળખો, નિરન્તર ઈશ્વરનું સાન્નિધ્ય પ્રાપ્ત કરો તો જ સાચા અર્થમાં મનુષ્ય બનશો. જ્ઞાનનો ઉદ્દેશ્ય આત્મત્ત્વને પ્રાપ્ત કરવાનો છે.

આપણે સંસારમાં રહીને શ્રેષ્ઠતમ કર્મો કરતા રહીને એ ઐશ્વર્યનો સંગ્રહ કરીએ, જેને ધરતી પરથી વિદાય લઈએ ત્યારે સાથે લઈ જઈ શકીએ.

ઋષિ દયાનન્દ નારી જાતિને પૂજનીય માને છે. પાંચ હજાર વર્ષ પછી ઉચ્ચ સ્વરે એમણે ઘોષણા કરી કે "યત્રનાર્ય સ્તુ પૂજ્યતે રમન્તે તત્ર દેવતા".

ઈશ્વર, જીવ અને પ્રકૃતિને અનાદિ માનીને, જીવને ભોક્તા, પ્રકૃતિને સાધન અને ઈશ્વર પાસેથી નિત્ય આનન્દ પ્રાપ્ત કરવો એ જીવનું લક્ષ્ય છે. નિરન્તર કર્મ કરતા રહીને પ્રભુની પ્રાપ્તિ માટે યત્નશીલ રહેવું માનવતા છે. ઋષિ દયાનન્દ મૂર્તિપૂજા, અવતારવાદ, આભડછેટ, ગુરુડમ અને અન્ધવિશ્વાસ, ફલિતજ્યોતિષ આદિ મતમતાન્તરો પ્રખર વિરોધી હતા, આ બધાને તેઓ મનુષ્યજાતિના પતનનું મુખ્ય કારણ માનતા હતા.

ઋષિ દયાનન્દ પછી આજે આપણામાં આવેલ પ્રમાદને કારણે સમાજમાં ફરીથી બ્રાહ્મણવાદ, પૌરાણિકતા અને પ્રતિમાપૂજનનો પ્રચાર વધતો જઈ રહ્યો છે. એમાં પણ ધાર્મિકતાના નામે ટી.વી. ચેનલોએ તો ભયંકર વધારો કર્યો છે. વૈદિકજ્ઞાન શૂન્ય લોકો સોના-ચાંદીના આભૂષણો અને લાખો રોકડા રૂપિયા પ્રતિમાઓ પર ન્યોછાવર કરી રહ્યા છે. તદોપરાન્ત પીસ ટી.વી. ઇસ્લામી ચેનલો દ્વારા વેદશાસ્ત્રોની મનમાની વ્યાખ્યાઓ કરીને ધર્માન્તર કરાઈ રહ્યું છે. દુષ્પ્રચારના આ અંધકૂપમાં ભણેલા-ગણેલા પ્રબુદ્ધજનો સાચી દિશા અને જ્ઞાનના અભાવમાં પ્રાચીન વૈદિકજ્ઞાન આર્ય પરમ્પરાથી દૂર જઈ રહ્યા છે. આવશ્યકતા છે કે આર્યસમાજની પણ એક ટી.વી. ચેનલ હોય, જેના મારફતે વૈદિકધર્મના પ્રચાર-પ્રસારનું કામ નિરન્તર ચાલ્યા કરે.

શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી અન્તર્રાષ્ટ્રીય ઉપદેશક મહાવિદ્યાલય ટંકારાનું ગૌરવ

તાજેતરમાં ગુજરાતમાં યોજાયેલ ખેલ-મહાકુંભમાં વિદ્યાલયના બ્રહ્મચારિઓએ ભાગ લઈને નિમ્નાનુસાર વિજેતા બન્યા છે. -

1. કુશ્તી:- અજીત રાજ્ય સ્તરે તૃતીય, મહુઅન જિલ્લા સ્તર દ્વિતીય. મહેન્દ્ર, ગૌતમ અને અજીત જિલ્લા સ્તરે પ્રથમ.

2. યોગાસન:- અજીત, રવિરંજન, મનોરંજન, રિતેશ અને હરિચરણ. ટિંકૂ, અને પ્રથમેશ જિલ્લા સ્તરે પ્રથમ.

૩. કબડ્ડીટીમ :- જિલ્લા સ્તરે દ્વિતીય. ટીમ:- અનૂપચન્દ્ર, રામશરણ, મહેન્દ્ર, ગૌતમ, ખગેન, રવિપ્રકાશ, સોનૂ, વેદમિત્ર અને અંકિત

૪. તરણ:- ચેતન જિલ્લા સ્તરે દ્વિતીય, રાકેશ અને ઋષિ જિલ્લા સ્તરે તૃતીય

૫. દોડ:- તોરણ જિલ્લા સ્તરે દ્વિતીય

नव संवत्सर को अपनाएं – निज गौरव का मान जगाएं

❒ विनोद बंसल

भारत व्रत पर्व व त्यौहारों का देश है। यूं तो काल गणना का प्रत्येक पल कोई न कोई महत्व रखता है किन्तु कुछ तिथियों का भारतीय काल गणना (कलैंडर) में विशेष महत्व है। भारतीय नव वर्ष (विक्रमी संवत्) का पहला दिन (यानि वर्ष-प्रतिपदा) अपने आप में अनूठा है। इसे नव संवत्सर भी कहते हैं। इस दिन पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है तथा दिन-रात बराबर होते हैं। इसके बाद से ही रात्रि की अपेक्षा दिन बड़ा होने लगता है। काली अंधेरी रात के अन्धकार को चीर चन्द्रमां की चांदनी अपनी छटा बिखेरना शुरू कर देती है। बसंत ऋतु का राज होने के कारण प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। फाल्गुन के रंग और फूलों की सुगंध से तन-मन प्रफुल्लित और उत्साहित रहता है।

विक्रमी सम्वत्सर की वैज्ञानिकता : भारत के पराक्रमी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा प्रारंभ किये जाने के कारण इसे विक्रमी संवत् के नाम से जाना जाता है। विक्रमी संवत् के बाद ही वर्ष को 12 माह का और सप्ताह को 7 दिन का माना गया। इसके महीनों का हिसाब सूर्य व चंद्रमा की गति के आधार पर रखा गया। विक्रमी संवत का प्रारंभ अंग्रेजी कलैण्डर ईसवीं सन् से 57 वर्ष पूर्व ही हो गया था। चन्द्रमा के पृथ्वी के चारों ओर एक चक्कर लगाने को एक माह माना जाता है, जबकि यह 29 दिन का होता है। हर मास को दो भागों में बांटा जाता है- **कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष**। कृष्णपक्ष, में चांद घटता है और शुक्लपक्ष में चांद बढ़ता है। दोनों पक्ष प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आदि ऐसे ही चलते हैं। कृष्णपक्ष के अन्तिम दिन (यानी अमावस्या को) चन्द्रमा बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता है जबकि शुक्लपक्ष के अन्तिम दिन (यानी पूर्णिमा को) चांद अपने पूरे यौवन पर होता है। अर्द्ध–रात्रि के स्थान पर सूर्योदय से दिवस परिवर्तन की व्यवस्था तथा सोमवार के स्थान पर रविवार को सप्ताह का प्रथम दिवस घोषित करने के साथ चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के स्थान पर चैत्र षुक्ल प्रतिपदा से वर्ष का आरम्भ करने का एक वैज्ञानिक आधार है। वैसे भी इंग्लैण्ड के ग्रीनविच नामक स्थान से दिन परिवर्तन की व्यवस्था में अर्द्ध–रात्रि के 12 बजे को आधार इसलिए बनाया गया है क्योंकि उस समय भारत में भगवान भास्कर की अगवानी करने के लिए प्रात: 5-30 बज रहे होते हैं। वारों के नामकरण की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया को देखें तो पता चलता है कि आकाश में ग्रहों की स्थिति सूर्य से प्रारम्भ होकर क्रमश: बुध, शुक्र, चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की है। पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा सहित इन्हीं अन्य छह ग्रहों पर सप्ताह के सात दिनों का नामकरण किया गया। तिथि घटे या बढ़े किंतु सूर्य ग्रहण सदा अमावस्या को होगा और चन्द्र ग्रहण सदा पूर्णिमा को होगा, इसमें अंतर नहीं आ सकता। तीसरे वर्ष एक मास बढ़ जाने पर भी ऋतुओं का प्रभाव उन्हीं महीनों में दिखाई देता है, जिनमें सामान्य वर्ष में दिखाई पड़ता है। जैसे, वसन्त के फूल चैत्र-वैशाख में ही खिलते हैं और पतझड़ माघ-फाल्गुन में ही होती है। इस प्रकार इस कालगणना में नक्षत्रों, ऋतुओं, मासों व दिवसों आदि का निर्धारण पूरी तरह प्रकृति पर आधारित वैज्ञानिक रूप से किया गया।

ऐतिहासिक संदर्भः वर्ष प्रतिपदा पृथ्वी का प्राकट्य दिवस, ब्रह्मा जी के द्वारा निर्मित सृष्टि का प्रथम दिवस, सतयुग का प्रारम्भ दिवस, त्रेता में भगवान श्री राम के राज्याभिषेक का दिवस (जिस दिन राम राज्य की स्थापना हुई), द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक दिवस होने के अलावा कलयुग के प्रथम सम्राट परीक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का दिन भी है। इसके अतिरिक्त देव पुरुष संत झूलेलाल, महर्षि गौतम व समाज संगठन के सूत्र पुरुष तथा सामाजिक चेतना के प्रेरक डॉ. केशव बलिराम हेड़गेवार का जन्म दिवस भी यही है। इसी दिन समाज सुधार के युग प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। वर्ष भर के लिए शक्ति संचय करने हेतु नौ दिनों की शक्ति साधना (चैत्र नवरात्रि) का प्रथम दिवस भी यही है। इतना ही नहीं, दुनिया के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य जी ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की। भगवान राम ने बाली के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्ति इसी दिन दिलाई। महाराज विक्रमादित्य ने आज से 2068 वर्ष पूर्व राष्ट्र को सुसंगठित कर शकों की शक्ति का उन्मूलन कर यवन, हूण, तुशार, तथा कंबोज देशों पर अपनी विजय ध्वजा फहराई थी। उसी विजय की स्मृति में यह प्रतिपदा संवत्सर के रूप में मनाई जाती है।

अन्य काल गणनाएँः ग्रेगेरियन (अंग्रेजी) कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना 3581 वर्ष, रोम की 2758 वर्ष यहूदी 5769 वर्ष, मिस्त्र की 28672 वर्ष, पारसी 198876 वर्ष तथा चीन की 96002306 वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 111 वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गयी है। जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसा जगत से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है।

ग्रन्थों व संतों का मत : **स्वामी विवेकानन्द** ने कहा था - "यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अन्तर्मन में राष्ट्र भक्ति के बीज को पल्लवित करना है तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों की दिनांकों पर आश्रित रहनेवाला अपना आत्म गौरव खो बैठता है। **महात्मा गांधी** ने 1944 की हरिजन पत्रिका में लिखा था "स्वराज्य का अर्थ है- स्वसंस्कृति, स्वधर्म एवं स्वपरम्पराओं का हृदय से निर्वहन करना। पराया धन और परायी परम्परा को अपनाने वाला व्यक्ति न ईमानदार होता है न आस्थावान"। नव संवत् यानि संवत्सरों का वर्णन **यजुर्वेद** के 27वें व 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः 45 व 15 में भी विस्तार से दिया गया है। **स्वाधीनता के पश्चात्:** देश की स्वाधीनता के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में **पंचाग सुधार समिति** का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष प्रो मेघनाथ साहा थे। वे स्वयं तो परमाणु वैज्ञानिक थे ही साथ ही उनकी इस समिति में एक भी सदस्य ऐसा नहीं था, जो भारत की ज्योतिष विद्या या हमारे धर्म शास्त्रों का ज्ञान रखता हो। यही नहीं, प्रो. साहा स्वय भी भारतीय काल गणना के 'सूर्य सिद्वात' के सर्वथा विरोधी थे तथा ज्योतिष को मूर्खतापूर्ण मानते थे।

परिणामत: इस समिति ने जो पंचाग बनाया उसे ग्रेगेरियन कलेंडर के अनुरूप ही बारह मासों में बांट दिया गया। अंतर केवल उनके नामकरण में रखा। अर्थात जनवरी, फरवरी आदि के स्थान पर चैत्र, बैशाख आदि रख दिए। लेकिन, महीनों व दिवसों की गणना ग्रेगेरियन कलेंडर के आधार पर ही की गई।**पर्व एक नाम अनेक:चेती चाँद** का त्यौहार, **गुडी पडवा** त्यौहार (महाराष्ट्र), **उगादी** त्यौहार (दक्षिण भारत) भी इसी दिन पडते हैं। वर्ष प्रतिपदा के आसपास ही पडने वाले अंग्रेजी वर्ष के अप्रेल माह से ही दुनियाभर में पुराने कामकाज को समेटकर नए कामकाज की रूपरेखा तय की जाती है। समस्त भारतीय व्यापारिक व गैर व्यापारिक प्रतिष्ठानों को अपना-अपना अधिक्रत लेखा जोखा इसी आधार पर रखना होता है जिसे **वही–खाता** वर्ष कहा जाता है। भारत के आय कर कानून के अनुसार प्रत्येक कर दाता को अपना कर निर्धारण भी इसी के आधार पर करवाना होता है जिसे **कर निर्धारण** वर्ष कहा जाता है। भारत सरकार तथा समस्त राज्य सरकारों का **बजट** वर्ष भी इसी के साथ प्रारंभ होता है। सरकारी पंचवर्शीय योजनाओं का आधार भी यही **वित्तीय** वर्ष होता है।

कैसे करें नव वर्ष का स्वागत: हमारे यहां रात्रि के अंधकार में नववर्ष का स्वागत नहीं होता बल्कि, भारतीय नव वर्ष तो सूरज की पहली किरण का स्वागत करके मनाया जाता है। सभी को नववर्ष की बधाई प्रेषित करें। नववर्श के ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर पुश्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से घर में सुगंधित वातावरण बनाएँ। शंख व मंगल ध्वनि के साथ प्रभात फ़ेरीयां निकाल कर ईश्वर उपासना हेतु बृहद यज्ञ करें। तथा गऊओं, संतों व बडों की सेवा करें। घरों, कार्यालयों व व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भगवा ध्वजों व तोरण से सजाएं । संत, ब्राह्मण, कन्या व गाय इत्यादि को भोजन कराएं। रोली-चन्दन का तिलक लगाते हुए मिठाइयाँ बाँटें। इनके अलावा नववर्ष प्रतिपदा पर कुछ ऐसे कार्य भी किए जा सकते हैं जिनसे समाज में सुख, शान्ति, पारस्परिक प्रेम तथा एकता के भाव उत्पन्न हों। जैसे, गरीबों और रोगग्रस्त व्यक्तियों की सहायता, वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने हेतु वृक्षारोपण, समाज में प्यार और विश्वास बढ़ाने के प्रयास, शिक्षा का प्रसार तथा सामाजिक कुरीतियां दूर करने जैसे कार्यों के लिए संकल्प लें। सामुदायिक सफ़ाई अभियान खेल कूद प्रतियोगिताएं,रक्त दान शिविर इत्यादि का आयोजन भी किया जा सकता है। आधुनिक साधनों (यथा एस एम एस, ई-मेल, फ़ेस बुक, और्कुट के साथ-साथ बैनर, होर्डिंग व कर–पत्रकों) के माध्यम से भी नव वर्ष की बधाईयां प्रेषित उसका महत्व जन–जन तक पहुंचाएं। इन श्रेष्ठताओं को राष्ट्र की ऋचाओं में समेटने एवं जीवन में उत्साह व आनन्द भरने के लिये यह नव संवत्सर की प्रतिपदा प्रति वर्ष समाज जीवन में आत्म गौरव भरने के लिए आता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सब भारतवासी इसे पूरी निष्ठा के साथ आत्मसात कर धूम–धाम से मनाएं और विश्वभर में इसका प्रकाश फ़ैलाएं। आओ! **सन् को छोड़ संवत अपनाएं, निज गौरव का मान जगाएं।।**

पता : 329, द्वितीय तल, संत नगर, ईस्ट औफ कैलाश, नई दिल्ली

(पृष्ठ 17 का शेष)

फहराकर शोभा यात्रा प्रारम्भ की। जिसमें भारतवर्ष से आये प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनमें मा. सोमनाथ, श्री विद्यारतन आर्य, श्री विजय सचदेवा, श्री शिवदत्त आर्य, श्री वी. पी. गुप्ता, श्री राम लाल आर्य, श्री बलदेव राज आर्य, श्री शान्ति लाल आर्य, श्री सत्यपाल गांधी, पं. जगदीश चन्द्र बसु, श्रीमती अरूणा सतीजा, श्रीमती शशि दीवान, श्री धनजी भाई आर्य, श्रीमती कृष्णा शर्मा, श्री मनसुख भाई धनजी वेलाणी, श्री रामचन्द्र अरोड़ा, श्रीमती उषा अरोड़ा, श्री शिव कुमार आर्य, श्रीमती वेद साहनी, श्री चन्द्र सेन गोयल, श्री राजीव चौधरी, श्रीमती अमृतापाल, श्री आर. बी. खन्ना, श्री विजय सरीन, श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री राकेश भटनागर, श्री विजय कुमार अग्रवाल, श्री श्रद्धानन्द, श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, श्री नोपाराम, श्रीमती गुलशन रानी, श्री ओमप्रकाश परूथी, श्री नन्द लाल आर्य, श्रीमती प्रेम लता गुप्ता, श्री हरिराज सिंह सोलंकी, श्री सुभाष चन्द्र आर्य, श्री प्रेम प्रकाश आर्य, श्री रामदास सेवक, श्री धर्मपाल सिंह, श्री जगवीर सिंह, श्री देसराज अग्रवाल, श्री दिनेश चन्द्र आचार्य, श्री सुखवीर सिंह आर्य, श्री सुबोध चन्द्र आर्य, श्री वेद प्रकाश, श्री विजय गुप्ता, श्री रामेश्वरदयाल गुप्ता, श्री सत्यपाल मोंगा आदि प्रमुख थे।

अपराह्न 2 से 5 बजे तक मुख्य श्रद्धांजलि सभा श्री मिठाईलाल सिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई और इसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री योगेश मुंजाल जी उपस्थित थे विशिष्ट अतिथि श्री रविन्द्र कुमार, श्री आर. के. सेठी एवं श्री महेश चोपड़ा उपस्थित हुये । मंच पर टंकारा ट्रस्ट के सभी ट्रस्टी उपस्थित थे । इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भाँति विशेष सम्मान के रूप में श्रीमती किरण अमित पटेल (भुज) को टंकारा श्री, श्री अमृतलाल मेघजी भाई बुद्धदेव (टंकारा) एवं श्री विद्यामित्र ठुकराल (दिल्ली) को टंकारारत्न और श्री अशोक दड़गा को टंकारा मित्र की उपाधि से अलंकृत किया गया । इसी अवसर पर स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी श्रद्धानन्द जी (महाराष्ट्र) को दिया गया । यह सम्मान मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सौजन्य से प्रतिवर्ष दिया जाता है । इस अवसर पर श्री एस के शर्मा जी ने श्री पूनम सूरी जी का संदेश पढ़कर सुनाया जो कि इस अंक में अलग से अन्य पृष्ठों पर प्रकाशित किया जा रहा है । शांतिपाठ के पश्चात् यह सत्र समाप्त हुआ ।

शिवरात्रि के दिन का अन्तिम सत्र रात्रि 8 से 11 बजे तक श्रीमती शिवराजवती आर्य, वरिष्ठ ट्रस्टी एवं उप-प्रधान, टंकारा ट्रस्ट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर आये हुये ऋषिभक्तों ने अपनी कवितायें, भजन और शब्दों द्वारा संक्षिप्त रूप से श्रद्धांजलि अर्पित की तदोपरान्त डॉ. धर्मेन्द्र विद्यार्थी द्वारा प्रवचन हुआ जिसमें आपने स्वामी दयानन्द द्वारा नारी जाति पर किये गये अहसानों की चर्चा की। इसके उपरान्त लगभग ढेड घंटे तक बिजनौर उत्तर प्रदेश से पधारे श्री कुलदीप आर्य एवं पत्नी श्रीमती संगीता आर्य द्वारा संयुक्त रूप से भजनों के माध्यम से उस ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस सत्र में रात्रि 11 बजे तक टंकारा परिसर में प्रत्येक ऋषिभक्त उपस्थित था । कुलदीप जी के भजन टंकारा ग्राम एवं आस-पास के गाँवों के शान्त वातावरण को चीरता हुआ उत्साह के साथ गूँज रहा था । सभी ने आपके भजनों की शैली की प्रशंसा की एवं निरन्तर अगले वर्षो में भी आने का निमंत्रण दिया।

समाचार दर्पण

दयानन्द के विचार जन जन तक पहुंचाएं- पूनम सूरी

डी.ए.वी. संस्था के 127 वर्ष होने के उपलक्ष में **डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोटा** में आयोजित यज्ञ महोत्सव के अवसर पर महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा द्वारा महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन प्रदर्शनी का शुभारंभ आर्य शिरोमणि श्री पूनम सूरी प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकृत्री समिति नई दिल्ली के कर कमलों द्वारा हुआ।

प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए श्री पूनम सूरी ने कहा कि महर्षि दयानन्द युग पुरुष थे। महर्षि दयानन्द के विचारों उनके द्वारा किये गए समाज सेवा के कार्यो एवं कुरुतियो को दूर करने के कार्यो का प्रचार जन जन तक होना चाहिए। एक पाडांल में महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन दर्शन एवं वैदिक साहित्य उपलब्ध कराना अच्छा प्रयास है।

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि कोटा में आयोजित राष्ट्रीय मेला दशहरा में गत 15 वर्षो से यह प्रदर्शनी आयोजित हो रही है। पिछले 3 वर्षो से नगर निगम कोटा द्वारा धार्मिक प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। मेले में प्रचारार्थ सस्ता एवं नि:शुल्क साहित्य भी वितरित किया जाता है।

केन्द्रीय कारागृह में आर्य समाज का प्रचार

मन में उठने वाली कामनाएं, काम, क्रोध, लोभ, अज्ञान, मोह अहंकार हमें मानव जीवन से भटकाने का काम करते हैं। इन दुर्वृत्तियों को त्यागकर ही मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। यह बात **आर्य समाज जिला सभा व डी.ए.वी. कोटा** की ओर से शनिवार को केन्द्रीय कारागार में आयोजित एक कार्यक्रम में कैदियों को संबोधित करते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामन्त्री एस.के. शर्मा ने कही। इस अवसर पर कैदियों के भोजन पकाने के लिए पतीला भेंट किया गया और कैदियों को तिल से बनी मिठाई वितरित की गई। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुन देव चढ्डा ने कहा कि आर्य समाज की ओर से सेवा और जागरूकता के कार्यक्रम सतत चलते रहते हैं। आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने कहा कि हम अपने विचारों को ऊंचा उठाएं। आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि धर्म के बारे में सभी जानते हैं, लेकिन अहंकारवश मुंह मोड़ते रहते हैं।

दयानन्द ने ही कुरितियों के विरूद्ध शंखनाद किया।

आर्य समाज संभाजीनगर (औरंगाबाद) की ओर से 2013 के आर्य दिनदर्शिका स्वर्गीय विधायक शालीग्राम राजाराम बसैये (बंधु) इनके आठवे स्मृतिदिन निमित्त श्री बारगजे इनके निवास स्थान पर विश्व हिन्दु अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया के कर कमलों द्वारा प्रकाशित किया गया।

इस अवसर पर प्रबोधन करते हुवे डॉ. तोगडिया जी ने ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ही आपसे स्पष्ट एवम् प्रखर इस्लाम व ईसाईयत पर बोलने वाले स्पष्ट वक्तव्य व सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ में समालोचन करने वाले महापुरुष रहे।

सेवा से अहंकार दूर होता है- पूनम सूरी
डी.ए.वी. ने किए सेवा कार्य

डी.ए.वी. स्थापना के 127 वर्ष के उपलक्ष्य में संस्था की ओर से 'निर्बलों को सम्बल' देने का उपक्रम किया गया। इस अवसर पर **डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति नई दिल्ली के प्रधान पूनम सूरी** के द्वारा गरीबों और जरूरतमन्दों को कम्बल और सिलाई मशीनों का वितरण किया गया। श्री पूनम सूरी ने सौ निर्धन परिवारों व विकलांगो को कम्बल, शॉल बांटे तथा जरूरतमन्द महिलाओं को स्वरोजगार हेतु सिलाई मशीनों का वितरण किया गया। ताकि वे सिलाई कढ़ाई करके परिवार का भरण पोषण व अपने बच्चों को शिक्षित कर सकें। वहीं एक विकलांग को ट्राई साइकल भी भेंट की गई। इस दौरान श्री सूरी ने कहा कि नर सेवा ही नारायण सेवा है।

उन्होंने कहा कि आर्य समाज का छठा नियम 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है' के सन्दर्भ में हमें सदैव लोगों की सेवा के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि सेवा करने के लिए सदैव धन की आवश्यकता नहीं होती है। सेवा का कार्य कहीं पर भी किया जा सकता है। श्री सूरी ने निर्धनों और गरीबों की सेवा को सबसे बड़ा उपकार बताया और कहा कि पीड़ित, शोषित लोगों की अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता व सहयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वे भी भगवान की बनाई हुई साकार मूर्तियां है।

अनाथ बच्चों की सहायतार्थ अभियान

आर्य समाज मानसरोवर के सभी सदस्यों स्थानीय आशीर्वाद बाल आश्रम में पहुँच कर अनाथ बच्चों की सहायतार्थ योगदान किया। अग्निहोत्र एवं भजनों का संचालन महिला आर्य समाज सहयोगिनियों द्वारा हुआ। आर्य समाज मानसरोवर की ओर से खाद्य सामग्री, वस्त्र एवं नकद राशि आश्रम को भेंट की गई।

दयानन्द जयन्ती उत्सव मनाया गया

मॉडल पब्लिक रेजिडेन्शियल स्कूल में महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती उत्सव शिविरा पंचांग के अनुसार मनाया गया जिसकी मुख्य अतिथि डॉ. मोदिका शर्मा जयपुर थी। अध्यक्षता प्रधानाध्यापक श्री मगनलाल जोशी जी ने की।

कार्यक्रम का प्रारम्भ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के साथ ब्रह्मचारी सौरभ मन्त्री आर्य समाज सज्जन नगर उदयपुर व विद्यालय की छात्राओं द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. मोदिका शर्मा ने महर्षि के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालते हुए महर्षि के द्वारा महिलाओं पर किए गए उपकारों की व्याख्या की और उनकी शिक्षा एवं उपदेशों को आचरण में लाने के लिए प्रेरित किया। प्रधानाध्यापक श्री मगनलाल जोशी जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महर्षि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम की प्रशंसा की और विद्यालय में सदैव प्रेरणा हेतु महर्षि के चित्र लगाने की इच्छा व्यक्त की।

महर्षि दयानन्द जयंती मनाई

आर्य समाज रामपुरा द्वारा संचालित मातृसेवा सदन बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में स्वामी दयानन्द की जयंती अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र सक्सेना विशिष्ट अतिथि श्री इन्द्र कुमार आर्य तथा अध्यक्षता हाडौती किसान यूनियन के महामन्त्री दशरथ सिंह जी ने की।

समारोह का शुभारम्भ वैदिक प्रार्थना के मन्त्रों से हुआ तत्पश्चात श्रीमति मृदला सक्सेना ने अपने उद्‌बोधन में स्वामी दयानन्द का परिचय बच्चों को बताया साथ ही उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ऋषि का जीवन आज इस युग में प्रासंगिक एवं अनुकरणीय है। विद्यालय के बच्चों ने भजन, कविता एवं भाषण के माध्यम से स्वामी के विभिन्न प्रसंगो को सुनाया।

श्रद्धापूर्वक मनाया महर्षि का 189वां जन्मोत्सव

कोटा, 7 मार्च। आर्य समाज जिला सभा कोटा एवं आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती का 189वां जन्मोत्सव गुरुवार को विज्ञान नगर स्थित राजीव प्लाजा पर श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं और गणमान्य नागरिकों ने यज्ञ में आहुतियां दीं तथा भजनों के द्वारा स्वामी दयानन्द को याद किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने कहा कि गुजरात के टंकारा में जन्मे इस महापुरुष ने 14 वर्ष की आयु में ही अपने उद्‌देश्य को पूरा करने के लिए घर छोड़ दिया था। गुरु की तलाश में स्वामी विरजानन्द से सच्ची शिक्षा प्राप्त की और वेदों के प्रचार के लिए सर्वस्व जीवन का समर्पण कर दिया। ऋषि दयानन्द ने हमें भेदभाव और छूआछूत को भुलाने का संदेश दिया है।

ऋषि जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 189वां जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव आर्य समाज मन्दिर प्रागंण में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्व श्री सागर कुमार शास्त्री व बच्चू सिंह आर्य व उपदेशक आचार्य रामनिवास गुणग्राहक द्वारा क्रमश: महर्षि गाथा व उनकी जीवनी से सम्बन्धित प्रसंग सुनाते हुए उपस्थित जनसमूह को भाव विमोर कर दिया।

विशेष ध्यान योग शिविर

पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर में 1 से 5 अप्रैल 2013 तक विशेष ध्यान योग शिविर का आयोजन श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के निर्देशन में किया जा रहा है।

इस शिविर में आसन, प्राणायाम, ध्यान और समाधि का अभ्यास गंगा के पावन तट पर कराया जायेगा। साथ ही आयुर्वेदिक औषधियों द्वारा आरोग्यता प्रदान की जायेगी।

भोजन-निवास की समुचित व्यवस्था रहेगी। साधक संख्या निश्चित है। अत: शीघ्रतिशीघ्र पंजीकरण कराकर स्थान सुरक्षित करें। विशेष शिविर शुल्क: 1200/-प्रति साधक सामान्य वार्षिक ध्यान योग शिविर 6 से 12 अप्रैल 2013 तक पूर्ववत् ही रहेगा। शुल्क 300/- रूपये है। मंत्री-योगधाम, मो. 9897804133, 8009497133

❑❑❑

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी-आश्रम) उधमपुर, जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 7 से 14 अप्रैल 2013 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा दर्शन-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। आश्रम में पूज्य महात्माजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे है अत: इच्छुक साधक विस्तृत जानकारी व अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन न. 09419107788, 9419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें। -भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

वैदिक विद्वान् का सम्मान

हाडौती के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के उपप्रधान आदरणीय श्री शिव नारायण उपाध्याय जी का सम्मान अजमेर परोपकारिणी सभा द्वारा भारत के उच्च कोटि के वेदज्ञ विद्वानों की महती उपस्थिति में परोपकारिणी सभा के मन्त्री आचार्य धर्मवीर जी द्वारा शाल ओढ़ाकर व श्रीफल भेंट कर किया गया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज मन्दिर, पिलखुवा, हापुड़

प्रधान- श्री राजपाल सिंह आर्य **मन्त्री-** श्री देवीदास आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री विजय कुमार आर्य

आर्य समाज वैशाली नगर, जयपुर, राजस्थान

प्रधान- डॉ. मोती लाल शर्मा **मन्त्री-** श्री आशीष मिनोचा

कोषाध्यक्ष- श्री जे एन चोपड़ा

आर्य समाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

प्रधान- श्री आदित्य प्रकाश गुप्त **मन्त्री-** श्री अमित कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री यशपाल आर्य

आर्य समाज रेलवे कॉलोनी, कोटा, राजस्थान

प्रधान- श्री हरिदत्त शर्मा **मन्त्री-** श्री करण सिंह आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री राधे श्याम शर्मा

"प्रिं. चित्रा नाकरा जी की इज़रायल यात्रा"

प्रख्यात् शिक्षाविद्, वैदिक संस्कृति एवं मूल्यों के प्रति अगाध-निष्ठावान, शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रपति पदक तथा अन्य अनेकों पुरस्कारों एवं सम्मानों से विभूषित **वेदव्यास डी.ए.वी. स्कूल की प्रधानाचार्य "श्रीमती चित्रा नाकरा** जी" इजरायल सरकार के विशेष अनुरोध पर भारत सरकार द्वारा प्रेषित उस विशिष्ठ प्रतिनिधि मण्डल के प्रतिनिधि सदस्य रहे जिन्होने इज़राइल की विशेष शैक्षणिक यात्रा की। उनके अनुसार इज़रायल के लोगों के हृदय में भारत देश के प्रति अपार सम्मान एवं स्नेह के भाव विद्यमान हैं। यहूदी समुदाय स्वयं को भारतीय वंश परम्परा में प्रख्यात् चक्रवर्ती सम्राट "यदु" का वंशज अनुभव करता हैं।

अपनी संस्कृति एवं मूल्यों के रक्षण में इज़रायल के लोग सतत् क्रियाशील हैं, वह जागे हुए योद्धाओं का देश है उनमें राष्ट्रप्रेम तथा देश भक्ति कूट-कूट कर भरी हुई है। वहाँ के लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता तथा भाषा पर गर्व का अनुभव करते हैं। 'हिब्रू' वहाँ की राष्ट्रभाषा है जो वैदिक भाषा के अति निकट है। उन लोगों ने अपने बलबूते पर रेगिस्तान के बंजर-विहड़ों को शस्य श्यामला भूमि में परिवर्तित कर दिया। वे अपने संयन्त्रों से सागर के खारे पानी को मीठे पानी में बदल कर अपने देश वासियों की प्यास बुझा रहे हैं। हरित ग्रहों (ग्रीन हाऊस) में वे फल-फूल अनाज आदि का अति वैज्ञानिक विधि द्वारा उत्पादन करते है। वहाँ का बच्चा-बच्चा अपनी पुरातन संस्कृति तथा अपने शहीदों पर देवताओं की तरह गर्व अनुभव करता हुआ उनके पदचिन्हों पर चलकर अपने देश को स्वाभिमान एवं स्वतन्त्रता के दिव्य शिखरों पर सुशोभित करना चाहता है। इज़रायल से हमारे देशवासी अनुशासन, कर्त्तव्यनिष्ठा, देश भक्ति तथा विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रहने के लिए अदम्य जिजीविषा की शक्ति और शिक्षा प्राप्त कर सकते है।

प्रि. चित्रा नाकरा जी जो आर्यसमाज की प्रधाना भी हैं ने वहाँ आयोजित सेमिनार में वेद की पवित्रतम ऋचा "शांन्ति मन्त्र" का पाठ तथा उसकी शिक्षाओं पर अपने विशेष विचार रखें जिस सुनकर सारा प्रतिनिधि मण्डल तथा इज़रायल वासी लोग भाव विभोर हो गये। दस दिन की यात्रा से प्राप्त अनुभव सुख, शान्ति, समृद्धि, अदम्य साहस, शौर्य तथा देशभक्ति की भावनाओं को प्रखरतम बनाती रहेगी।

(पृष्ठ 4 का शेष)

उत्सवों में प्रतिष्ठा व कीर्ति से अलग उनका एक अत्यन्त अन्तर्मुखी व्यक्तित्व है जो उनकी लगन का प्रामाणिक परिचय देता है। दूसरों के कष्टों व्यथाओं को सुनने में बहुत ही सहिष्णु हैं।

कहां तो मैं तमिलनाडु से, एक साधारण सा नागरिक यदा कदा मिलने वाला और कहां सदाबहार पंजाबी प्राजी का माधुर्य से भरा सुरीला स्वर! दिल्ली में मिलते ही पहला वाक्य खाने-पीने से जुड़ा होता। आर्य बन्धुओं से, प्रधान, अध्यक्ष, मन्त्री से उसी स्नेह से मिलते हैं। उनकी निजता में मैत्रीभाव में, एक मृदुल, अक्षुण्ण सद्भाव की गरिमा हैं। व्यक्तिगत स्तर पर श्री सहगल जी, मितभाषी मधुरभाषी हैं। मित्रों एवं परिचितों के लिए सदा उपलब्ध सहायक हैं। आर्य समाज के कार्यों में वे निष्ठावान्, यशस्वी पथिक हैं। आर्य समाज की सेवा, जन कल्याण के लिए सर्वदा समर्पित, योग्य आर्य नेता। उनकी निच्छल हंसी आर्य भाइयों के लिए प्रभु प्रसाद है। जिस कार्य को हाथ में लेते हैं। सफलता पूर्वक सम्पन्न करना उनके स्वभाव की महिमा है, गुणात्मक प्रवृत्ति है। आर्य समाज की विकृतियों एवं पारस्परिक मनो-मालिन्य से वे सदा परेशान के साथ-साथ चिन्तित भी हैं।

वे मुझसे प्रायः कहते हैं" कण्णन- हमारा अत्यन्त सुसभ्य अधिक परिष्कृत, पूर्णतः समुन्नत आर्यसमाज किस पथ का पथिक बन रहा है। यदि महर्षि के अदभ्य नीतियों कार्यक्रमों के अनुरुप समाज को समुन्नत न कर सके तो कम से कम व्यक्तिगत सीमित दृष्टिकोण को न अपनाकर, आर्यसमाज के सर्वागीण विकास में बाधा तो न डालें। जिज्ञासा और विनय उनके व्यक्तिगत को निखारता है।

शक्ति, शालीनता से ओत प्रोत गौरव, गरिमा से मण्डित आर्य समाज उनके रग, रग में समाविष्ट है। उनके पावन जन्म दिवस पर पुनीत मंगल कामना से मेरी प्रभु प्रार्थना है कि श्री सहगल जी अगणित कार्यकलापों से एक ऐसे वातावरण का सृजन कर सकें जहां समस्त आर्यजन सस्वर ऊंची ध्वनि से उच्चरित कर सकें।

"तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु"

हमारा मन प्रत्येक विद्या में शिव संकल्प से सम्पन्न हो। बस यही समय है, आज आर्य परिवार बहुत कमजोर हो गया है। यदि श्री सहगल जी इस अनुपम कार्य को कर सके। पुनः आप तो प्रारम्भ से ही समन्वय, समवाय एवं सहिष्णुता के उद्घोषक रहे हैं। आपके प्रयास से आर्यसमाज के विकीर्ण प्रासाद को संबल मिल सकेगा। इस प्रशस्त प्रयत्न से आर्य परिवार को जो प्रसाद प्राप्त होगा, वह अनुकरणीय आहूति का, प्रखर प्रसादन होगा और जन्म दिवस का आर्य परिवार को समर्पित स्वतः स्नेहिल भेंट।

यदि आर्य समाज का हमारा बृहद् परिवार पूज्य श्री सहगल जी के सुखदा, सुग्राहय, सुगठित, सुचारु पथ पर अग्रसर हो जाय, उन्मुक्त हृदय से, स्नेहसिक्त भाव से सभी को अपना ले तो सच आज 70-80 वर्ष पुराने सहज भातृभाव की रीत आर्य संगठन में पुनः स्थापित हो जाय, जो किसी भी शक्ति सम्पन्न संगठन का अनिवार्य अंश है।

ऐसी स्थिति में हमारा आर्यसमाज एक सुदृढ़ हिन्दू संगठन के रूप में सम्पूर्ण भारतीय समाज को एक नई दिशा दे सकता है। समाज का भरपूर सहयोग आर्य समाज को मिल सकेगा, जब कोई भी संस्था शक्ति सम्पन्न होगी तो शासन व्यवस्था के अनेक तथ्यों पर केन्द्रीय, सरकार तथा राज्य की सरकारें आर्यसमाज की सम्मति के लिए बाध्य होगी।

सरकार का जब सुझाव आर्य समाज की कार्य पद्धति पर केन्द्रित होगा, तब आर्य समाज की अपनी एक पृथक् पहचान होगी। इस साहचर्य भावपूर्ण कार्य के लिए वर्तमान शीर्षस्थ आर्यनेताओं में श्री रामनाथ जी सहगल एक ऐसे सामर्थ्यवान सज्जन उपलब्ध हैं, जो आर्य समाज के ध्वज को ऊर्ध्वारोहण कर सकें। "ओ३म् शम्"

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

स्व. श्री ओंकार नाथ आर्य की धर्मपत्नी इस यज्ञ परम्परा और ऋषि जन्म स्थान के प्रति आस्था का विस्तार करते अपने पुत्र श्री सुनील मानकटला (ट्रस्टी) एवं दामाद संगीताचार्य श्री साहनी जी के साथ

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलो में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां प्रतिवर्ष कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते है कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मियता बनी रहे। इस वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते है। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते है। इस वर्ष 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

नूतन वर्ष

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा,
आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर
समस्त देशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं

टंकारा समाचार अप्रैल, 2013
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel R.M.S. on 1/2-04-2013
R.N.I. No 68339/98

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 दूरभाष : 41548504 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय